ॐ

❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

राजर्षि अमोघवर्षकृता

प्रश्नोत्तर रत्नमालिका

•

नम्र सूचन
इस ग्रन्थ के अभ्यास का कार्य पूर्ण होते ही नियत समयावधि में शीघ्र वापस करने की कृपा करें. जिससे अन्य वाचकगण इसका उपयोग कर सकें.

श्री प्राणलालभाई देसाई

प्रकाशक

वीरेन्द्रकुमार देवेन्द्रकुमार जैन

श्री सन्मति कुटीर, 138 C बावडी चाल

चन्दावाडी, बम्बई 400004.

मूल्य

रु० 1.50 पै०

प्रथम आवृत्ति] महावीर जयन्ती [1976

पंथ लाइ जिन दीन्ह गियानू

स्व० पं० कुन्दनलाल जैन मोदी

प्रश्नोत्तर रत्नमाला का कर्त्ता ?

रायबहादुर, महामहोपाध्याय, साहित्यवाचस्पति

पं० गौरीशंकर हीराचन्द जी ओझा

प्रश्नोत्तर रत्नमाला नामक 32 श्लोकों की पुस्तक देखने में बहुत छोटी है, परन्तु उसका उपदेश अमूल्य और सर्वमान्य होने के कारण प्राचीन काल से ही वह रत्नों की माला के समान कंठ में धारण करने योग्य मानी जाती है। भिन्न धर्मावलम्बी भी उसके उपदेश को आदर के साथ स्वीकार करते हैं। इतना ही नहीं, किन्तु जैन तो उसे अपने एक आचार्य का रचा हुआ मानते हैं। उस परमोपयोगी पुस्तक के कर्ता के विषय में बहुत कुछ मतभेद हैं। कोई तो उसे यतीन्द्र शुकदेव जी[1] का रचा हुआ बतलाते हैं, कोई शंकराचार्य[2] को उसका कर्ता मानते हैं। श्वेताम्बरी जैन उसे अपने आचार्य विमल[3] की कृति प्रकट करते हैं, और दिगम्बरी जैनों के

---

1. इति श्रीशुकयतीन्द्रविरचिता प्रश्नोत्तरमाला समाप्ता ।। बंगाल एशियाटिक सोसाइटी का जनरल, जिल्द 16, भाग 2 पृ० 1235।
2. इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचिता प्रश्नोत्तरमाला समाप्ता ।। राजा राजेन्द्रलाल मित्र संगृहीत हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकों की सूची जि० 2 पृ० 355।
3. रचयिता सितपट गुरुणा विमला विमलेन रत्नमालेव प्रश्नोत्तरमालेयं कंठगत्ता किं न भूषयति ।।

   इंडियन एण्टिक्वेरी, जि० 19 पृ० 378।

   निर्णयसागर बम्बई से प्रकाशित काव्यमाला सप्तम गुच्छक पृ० 121।

भंडार से मिली हुई प्रतियों के अन्त में लिखा है कि "विवेक से राज्य छोड़ने वाले राजा अमोघवर्ष[4] ने विद्वानों की उत्तम अलंकार रूप यह रत्नमाला रची है।"

इस प्रकार भिन्न भिन्न चार पुरुष उसके कर्ता माने जाते हैं, जिनमें से कोई एक उसका कर्ता होना चाहिये। उक्त पुस्तक में वेद वाक्य के सेवन, विष्णु और शिव की भक्ति तथा सेवा का उपदेश[५] होने और जैनों के उपासनीय देवताओं के नाम न होने से स्पष्ट है कि वह जैनी नहीं, किन्तु किसी वेदधर्मानुयायी का रचा हुआ है। और सम्भव है कि विमल को उसका कर्ता प्रकट करने वाला अंतिम श्लोक जो श्वेताम्बरियों के भंडार की प्रति में लिखा मिलता है, किसी जैन विद्वान् ने पीछे से उसमें धर दिया हो। इसी प्रकार शुकदेव जी और शंकराचार्य को उसका कर्ता मानने के लिए कई एक प्रतियों के अंत में उनका नाम होने के अतिरिक्त कोई प्रमाण नहीं है। ईसवी सन् की ग्यारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में उसका तिब्बती भाषा में अनुवाद हुआ जिसमें लिखा है कि 'वह पुस्तक बड़े राजा अमोघवर्ष ने रचा था।' और दिगम्बर जैनों के

---

4. विवेकात्त्यक्तराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका। रचिताऽमोघवर्षेण सुधियां सदलंकृति। इंडियन ऐण्टिक्वेरी जि० 19 पृ० 378। बम्बई गेजेटियर जि० 1, भा० २ पृ० 201।

5. सेव्यं सदा किं गुरुवेदवाक्यं ।। 8 ।।—।। कार्या प्रिया का शिवविष्णुभक्तिः ···· ····10 ।। ········ ···· ।। किं कर्म कृत्वा न हि शोचनीयं कामारिकंसारिसमर्चनाख्यं ।। 20 ।। ···· ···· ।। उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते किमाशु कार्यं सुधिया प्रयत्नात्। वाक्कायचित्तैः सुखदं यमघ्नं मुरारिपादाम्बुजमेव चिन्त्यम् ।। 24 ।।···· ।। किं कर्म यत्प्रीतिकरं मुरारे ——।। 30 ।।

भडार स मिला हुइ पुस्तक में भी वैसा ही लिखा मिलता है। अत-एव अमोघवर्ष नामक कोई राजा उसका कर्ता होना चाहिये।

अमोघवर्ष नाम नहीं, किन्तु उपनाम अर्थात् विरुद है, जो दक्षिण में राज्य करने वाले राष्ट्रकूट (राठोड़) वंश के चार राजाओं ने और मालवे के परमार राजा मुंज ने धारण किया था। इन अमोघवर्ष उपनाम वाले पाँच राजाओं में से राठौड़ राजा अमोघवर्ष प्रथम और परमार राजा मुंज[६] ये दो ही विद्वान् और

---

6. मालवे के परमार राजा हर्ष का पुत्र मुंज, जिसका उपनाम अमोघवर्ष और वाक्पतिराज (....श्री भोज इत्यात्मज। प्रीत्या योग्य इति प्रतापवसतिख्यातेन मुंजाख्यया यः स्वे वाक्पति-*राजभूमिपतिना राज्येऽभिषिक्तः स्वयम् ॥ 43 ॥* धनपाल रचित तिलकमंजरी पृ० 5 ॥ .... ॥ श्रीमदमोघवर्षदेवापरा-भिधान श्रीमद्वाक्पतिराजदेव पृथ्वीवल्लभ नरेन्द्रदेव कुशली ....॥ वाक्पतिराज (मुंज) का संवत् 1036 के दानपत्र (इण्डियन ऐण्टिक्वेरी जि० 14 पृ० 160) मिलते हैं, प्रसिद्ध विद्वान् था और उसकी सभा में धनपाल (तिलकमंजरी का कर्ता) पद्मगुप्त (नवसाहसांक चरित्त का रचयिता), धनंजय (दशरूपक का कर्ता) धनिक (दशरूपावलोक का रचयिता), हलायुध और अमितगति आदि कई विद्वान् थे। उसकी रची हुई कोई पुस्तक इस समय उपलब्ध नहीं है तथापि उसके रचे हुए श्लोक सुभाषितावलि और अलंकार की पुस्तकों में मिलते हैं और उसकी विद्वत्ता की प्रशंसा अनेक विद्वानों ने की है। (...........यः सर्वविद्याब्धिना .... श्री मुंजेन सरस्वतीति सदसि क्षोणीभृता व्याहृतः ॥ 53 ॥ तिलक मंजरी पृ० 6 ॥.......॥ सरस्वतीकल्पलतैककन्दं वन्दामहे वाक्पतिराजदेवम्। यस्य प्रसादाद्वयमप्यनन्यकवीन्द्रचीर्णे पथि

कवि थे। अन्य तीन राजाओं को सरस्वती देवी की प्रसादी मिलने का कोई प्रमाण नहीं मिलता और न उनमें से एक भी 6 वर्ष से अधिक राज्य करने पाया था।

उपर्युक्त दोनों विद्वान् राजाओं में से परमार मुंज (अमोघ-वर्ष) भी उसका कर्ता नहीं ठहर सकता, क्योंकि उक्त पुस्तक के अंत में स्पष्ट लिखा है कि 'विवेक से राज्य छोड़ने वाले राजा अमोघवर्ष ने उसे रचा।" यह कथन मुंज के वास्ते यथार्थ नहीं हो सकता, क्यों कि वह विवेक (वृद्धावस्था) के कारण राज्य छोड़ बानप्रस्थ होने नहीं पाया, किन्तु कल्याण के चौलुक्य (सोलंकी) राजा तैलप पर चढ़ाई करने के समय कैद होकर मारा गया था[7]।

उपर्युक्त कथन राठौड़ राजा अमोघवर्ष प्रथम के वास्ते सार्थक हो सकता है। क्यों कि वह विद्वान् था, कविराज उसकी उपाधि थी, 'कविराज मार्ग' नामक अलंकार का ग्रंथ भी उसने कनड़ी[8] भाषा में रचा था, जो उक्त विषय में प्रमाण रूप माना जाता है। 60 वर्ष के लगभग राज्य करने के पश्चात् अपने पुत्र कृष्णराज (अकालवर्ष) दूसरे को राज्य देकर वह वानप्रस्थ[9] हुआ था।

संचरामः ॥ 1 ॥ 18 ॥······· अतीते विक्रमादित्ये गतेऽस्तं सातवाहने। कविमित्रे विशश्राम यस्मिन्देवी सरस्वती ॥11॥93॥ नवसाहसांकचरित ॥·······॥ गते मुंजे यशःपुंजे निरालम्बा सरस्वती ॥ प्रबन्ध चिन्तामणि पृ० 63) ॥

7. मुंजराज, प्रबन्ध चिन्तामणि पृ० 55 –63।

8. अमाघवर्ष कर्नाटक देश का राजा था जहाँ की मातृभाषा कनड़ी थी।

9. अमोघवर्ष प्रथम का राज्याभिषेक शक संवत् 737 (विक्रम सं० 872) में हुआ था। शक संवत् 797 (वि० सं० 932) के

और दिगम्बर जैनों का जिनके भंडार की पुस्तक में उसका नाम मिलता है, आश्रयदाता[10] वही था अतएव प्रश्नोत्तर

पूर्व उसने राजकार्य छोड़ दिया था और श० सं० 799 (वि० सं० 934) तक तो वह विद्यमान था, (जिसके पीछे किसी समय उसका देहान्त हुआ होगा ।) ऐसा प्राचीन शिलालेख और ताम्रपत्रों से निश्चय होता है। अतएव यदि राज्य छोड़ने के बाद उसने प्रश्नोत्तरमाला की रचना की हो तो उसका समय वि० सं० 932 के निकट स्थिर होता है।

10. जैसे ईसवी सन् की 12 वीं शताब्दी में गुजरात के चौलुक्य राजा कुमारपाल के दरबार में श्वेताम्बरी जैन पंडितों का अच्छा सन्मान रहा और हेमचन्द्र सूरि (हेमाचार्य) को राजा के गुरु कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ वैसे ही अमोघवर्ष के राज्य में दिगम्बरी जैन विद्वानों का बहु त कुछ आदर हुआ और उनमें से जिनसेनाचार्य को उसने अपने गुरु का पद दिया (इति विरचितमेतत्काव्यमावेष्ट्य मेघं बहुगुणमदोषं कालिदासस्य काव्यं मलिनितपरकाव्यं विष्ठतादाशशांकं भुवनमवतु देवस्सर्वदामोघवर्षः ।। 71 ।। श्री वीरसेनमुनिपाद-पयोजभृंगः श्रीमानभूद्विनयसेनमुनिर्गरीयान् । तच्चोदितेन जिनसेनमुनीश्वरेण काव्यं व्यधायि परिवेष्टितमेघदूतम् ।।71।। इत्यमोघवर्षपरमेश्वरपरमगुरुश्री जिनसेनाचार्यविरचिते मेघ-दूतवेष्टितवेष्टिते पार्श्वाभ्युदये भगवत्कैवल्यवर्णनं नाम चतुर्थस्सर्गः ।। 4 ।। जिनसेनसूरिरचित पार्श्वाभ्युदय काव्य— बम्बई की एशियाटिक सोसायटी का जर्नल जि० 18 पृष्ठ 227 ।। — ।। यस्य प्रांशुनखांशुजालविलसद्धारान्तराविर्भव-त्पादाम्भोजरजःपिशंगमुकुटप्रत्यग्ररत्नद्युतिः । संस्मर्ता स्व-

माला का कर्ता राठौड़ राजा अमोघवर्ष प्रथम ही होना चाहिये।

•

ममोघवर्षनृपतिः पूतोहमद्येत्यलं स श्रीमान् जिनसेन पूज्यभगवत्पादो जगन्मंगलम् ॥— जिनसेनाचार्य के शिष्य गुणभद्र रचित उत्तरपुराण के अन्त की प्रशस्ति, श्लोक–10)

1906 सरस्वती हीरक जयन्ति अंक से उद्धृत पृष्ठ 476 प्रकाशक इंडियन प्रेस प्रा० लि० इलाहाबाद।

ॐ

श्री वीतरागाय नमः

श्रीमद्राजर्षि अमोघवर्ष कृता

प्रश्नोत्तररत्नमालिका

रचयिता पं० गुणभद्र जैन कविरत्न

मंगलाचरण

नागेन्द्र नर, सुरपति जिन्हें सादर नमाते माथ हैं;
वे वर्धमान जिनेन्द्र देवों के निरन्तर नाथ हैं ॥1॥

उन वीर प्रभु को नम कहूँगा प्रश्न उत्तर मालिका।
जो हैं सकल समुदाय की सुन्दर विमल-मति-पालिका ॥
जो दृष्ट और अदृष्ट द्रव्यों के चतुर ज्ञाता सही।
वे धर गले में प्रश्न-उत्तर-मालिका शोभें यहीं ॥
यह मालिका सुन्दर सुगन्धित प्रश्न पुष्पों को धरे।
जग मानवों के अन्तरङ्ग के दुर्विचारों को हरे ॥2॥

भगवन्, मुझे आदेय क्या? सद्‌गुरु वचन आदेय है।
क्या हेय है संसार में? दुष्कर्म सारा हेय है ॥
गुरु कौन है? सच्चा प्रभो; मैं चाहता यह जानना?
जो सत्त्वहित में रक्त जिसके तत्त्व का ज्ञातापना ॥3॥

क्या कर्म करना चाहिये सत्वर यहाँ विद्वान को?
संसार सन्तति छेद ही है, योग्य शुभ गुणवान को।
क्या मोक्षतरु का बीज है? मम जानना चाहे हिया।
वह ज्ञान शिवतरु बीज है, जिसमें सदा सम्यक् क्रिया ॥4॥

पाथेय है क्या लोक में ? पाथेय धर्म विशुद्ध है।
है कौन पावन विश्व में ? जिसका हृदय अति शुद्ध है।
है कौन पंडित लोक में ? जिसको हिताहित ज्ञान है।
क्या है विषम विष ? गुरुजनों के प्रति जो महा अवमान है ॥5॥

दुःखपूर्ण इस संसार में, भगवन् कहें क्या सार है ?
इस जीव का नर जन्म में जो सौख्यप्रद अवतार है॥
दिन रात उसमें यह मनुज निज चित्त तत्त्वों में धरे।
सुखशान्ति पूर्वक सर्वदा, उपकार जीवों का करे ॥6॥

है कौन मदिरा तुल्य मोहक ? वस्तुओं में प्रेम है।
है जीव गुण का कौन तस्कर ? भोग ही अक्षेय है॥
भव की लता किससे बढ़े ? पर द्रव्य की अभिलाष से।
है कौन वैरी जीव का ? उद्यम न हो आलस्य से ॥7॥

किससे यहाँ भय लोक को ? निज मृत्यु से डरते सही।
है कौन अन्धे से अधिक ? रागी महा अन्धा यहीं॥
जग में अनेकों शूर हैं, पर कौन सच्चा वीर है ?
प्रिय कामिनी-लोचन शरों से जो व्यथित नहिं, धीर है।8॥

कर्णाञ्जली द्वारा सुधा-सम क्या सभी को पेय है ?
विज्ञानियों का विश्व में, सद्बोध नित आदेय है॥
क्या कार्य गुरुता मूल है, यह चाहते हम जानना।
अपने लिए पर से कभी करना नहीं जो याचना ॥9॥

क्या है गहन भूलोक में ? नारी चरित दुर्गम महा।
है कौन अतिशय दक्ष ? खंडित जो न हो उससे यहाँ॥
दारिद्र है क्या वस्तु ? जो संतोष का रखना नहीं।
लघुता यहाँ क्या वस्तु है ? जो याचता जाकर कहीं ॥10॥

है सत्य जीवन कौन सा ? जिसमें रहे निरवद्यता।
क्या मूर्खता ? जो दक्ष भी अपना न ज्ञान विकासता ॥
है कौन जागृत लोक में ? वैराग्य सह मतिमान है।
है कौन सी निद्रा विकट ? नर मूढ़ता बलवान है ॥11॥

ये पद्मिनी-दल-जल सदृश, क्या है चपल संसार में ?
धन, आयु, यौवन है न थिर सचमुच किसी के द्वार में ॥
शशिकर निकर सम कौन है ? शीतल तथा सुखप्रद सदा।
सज्जन सभी हैं विश्व में सुख शान्तिदायक सर्वदा ॥12॥

क्या सत्य है संसार में ? है भूत-हित ही सत्यता।
क्या वस्तु प्रिय है प्राणियों को ? प्राण में अनुरक्तता ॥
क्या है नरक भूलोक में ? भारी नरक परतंत्रता।
क्या सौख्य है जगजीव को ? है सर्व संग विरक्तता ॥13॥

क्या दान है कहिये मुझे ? निष्कांक्षता शुभ दान है।
है कौन अपना मित्र ? करता पाप से जो त्राण है ॥
क्या भारती मंडल महा ? प्रिय सत्य को मण्डन कहा।
है कौन सा भूषण परम ? शुभशील ही भूषण महा ॥ 4॥

क्या है विपाक अनर्थ का ? होती हृदय में व्यग्रता।
है सुख प्रदायक वस्तु क्या ? सर्वत्र सबसे मित्रता।
सम्पूर्ण दुख ध्वंसार्थ जग में कौन अतिशय दक्ष है ?
हो त्याग से सब दुःख क्षय यह बात नित प्रत्यक्ष है ॥15॥

अंधा यहाँ है कौन नर ? आसक्त जो दुष्कर्म में।
मानव बधिर है कौन सा ? नहिं ध्यान दे हित धर्म में ॥
इस लोक का समुदाय सचमुच मूक किसको धारता ?
जो जीव अवसर पर मधुर वाणी नहीं उच्चारता ॥16॥

क्या है मरण इस लोक में ? है है मरण निज मूर्खता।
क्या है अमूल्य ? यथा समय दे दान में जो सम्पदा ॥
क्या बात वह मरणान्त तक जो शूल से चुभती रहे ?
प्रच्छन्न-कृत दुष्कर्म निज नित शूल सा मन में रहे ॥17॥

किस किस विषय में जीव को शुभ यत्न करना चाहिये ?
विद्या-पठन, शुभ औषधी का दान करना चाहिये ॥
अवधीरणा करता रहे किस कार्य की निज चित्त में ?
अवधीरणा करता रहे, खल, अन्ययोषित वित्त में ॥18॥

निशि दिन मनुज इस विश्व में किस बात का चिन्तन करे ?
सोचे जगत निस्सारता, मन में न प्रमदा को धरे ॥
किसको बनाना चाहिये, समुदाय में अपनी प्रिया ?
अपनाइये सर्वत्र ही, दाक्षिण्य, शुभ मैत्री, दया ॥19॥

हो कंठगत निज प्राण भी, किसके न हम आधीन हों ?
रहता निरन्तर खेद में, जो मूर्ख वा मतिहीन हो।
अभिमान वश जो अन्य मानव को न कुछ भी मानता।
होके कृतघ्न महान् पर-उपकार को नहीं जानता ॥20॥

क्या पूज्य है ? सद्वृत्त है, निर्धन किसे कहते यहाँ !
चारित्र से जो है पतित, निर्धन वही जग में महा।
जीता यहाँ किसने प्रभो, इस कष्टमय संसार को ?
जो है तितिक्षा, सत्ययुत वह जीतता भव-भार को ॥21॥

सुरलोक के सुर भी सतत वन्दन करे किसको सदा ?
करते प्रणाम उसे अमर जिसमें दयामय सम्पदा ॥
किस वस्तु से विद्वान को, उद्वेग करना चाहिये ?
संसार अटवी से हृदय में खेद धरना चाहिये ॥22॥

ये जीव जगती के सकल सब काल किसके वश रहें ?
जो हो विनय से युक्त, वाणी सत्य प्रिय मुख से कहे।
किस मार्ग में विद्वान को, रहना हृदय से इष्ट है ?
सज्जन रहें सन्मार्ग में जो दृष्ट और अदृष्ट है ॥23॥

विद्युत-विलास समान चंचल कौन सी हैं वस्तुएँ ?
है दुर्जनों का संग चंचल, हैं चपल ये युवतिएँ ॥
कुल-शैल सम अविचल अटल हैं कौन नर कलिकाल में ?
सज्जन पुरुष रहते अटल, निज मार्ग में त्रयकाल में ॥24॥

क्या सोच करने योग्य है ? है शोच्य नर कार्पण्य ही।
होते विभूति प्रशस्य क्या ? मानव सुखद औदार्य ही ॥
धनहीन की किसमें प्रंशसा ? शक्ति युक्त उदारता।
किसमें भला बलवान का ? मैत्री क्षमा गुण धारता ॥25॥

संसार में सुरमणि सदृश अत्यन्त दुर्लभ क्या रहा ?
आगे कहूँगा चार जो वे भद्र दुर्लभतर महा ॥
अज्ञान-तम का क्षीणकर निर्मल बने हैं जो अहा।
उन दिव्य पुरुषों ने सुखदतर भद्र किसको है कहा ? ॥26॥

सुन्दर मधुर वाणी सहित, जाता दिया जो दान है।
क्षमता सहित है शूरता, सुज्ञान पर नहीं मान है ॥
तज गर्व अपने द्रव्य का करता निरन्तर दान है।
ये चार भद्र मनुष्य को दुर्लभ सदैव महान है ॥27॥

हैं जिनके कंठो में, प्रश्नोत्तर - रत्न - मालिका स्वच्छ।
वे मुक्ता - मण्डित जन, विज्ञों में दिव्य प्रत्यक्ष ॥28॥

शुभ ज्ञान से छोड़ा सकल यह राज्य वैभव सर्वथा।
की उस अमोल क्षितीश ने इस रत्नमाला की कथा ॥
भूषण समान सदैव है, यह विज्ञ पुरुषों के लिए।
कर प्रश्न नाना बोधप्रद उत्तर गये इसमें दिये ॥29॥

●

अपरा प्रश्नोत्तर-मालिका

भगवान क्या आराध्य है ? रत्नत्रय, चिद् शुद्ध ।
है निजात्म आराध्य अति, जिन स्वरूप वा सिद्ध ॥1॥

कौन देव ? सर्वज्ञ जो, क्या है श्रुत ? तद्बोध ।
सुगुरु कोन ? निर्ग्रन्थ मुनि, निज दृढ़, विषय निरोध ॥2॥

क्या दुर्लभ ? नर जन्म है, या उसको क्या काम ?
त्याग संग कीजे स्वहित, गुरुवाणी विश्राम ॥3॥

क्या सुमुक्ति ? सब कर्म क्षति, क्या है इसका पन्थ ?
दृष्टि, ज्ञान, सद् वृत्त पथ, कितना सौख्य ? अनन्त ॥4॥

क्या हिंसा - जड़ ? कोप है, परवंचक छल ज्ञान ।
क्यों गुरु - पूजा अतिक्रमण, जहाँ अधम अभिमान ॥5॥

क्या अनर्थ ? यह लोभ है, शोभा ? शील अपार ।
क्या महिमा है ? विज्ञता, क्या विवेक ? आचार ॥ 6॥

मन द्वारा क्या चिन्त्य नहीं ? परधन, स्त्री, अपकार ।
कैसा वचन न बोलना ? परुष, कटुक दुख - द्वार ॥ 7॥

हेय सतत क्या ? व्यसनिता, पिशुन भाव, मात्सर्य ।
क्या अकार्य ? मन अरुचिकर, परभव दुखद अनार्य ॥8॥

चंचल क्या है ? वित्त हैं, काव्य तुल्य निर्दोष ?
धर्म सहित जीवन सफल, निष्कलंक यश घोष ॥9॥

कौन कृत्य प्रतिदिन करें ? जिनपूजा, शुभदान ।
सामायिक गुरु सेवना, शास्त्राभ्यास प्रमाण ॥10॥

●

ॐ

श्रीमद् राजर्षि अमोघवर्ष कृता

प्रश्नोत्तररत्नमालिका

आर्या

प्रणिपत्य वर्धमानं, प्रश्नोत्तररत्नमालिकां वक्ष्ये।
नागनरामरवन्द्यं, देवं देवाधिपं वीरम्॥1॥

भवनवासी, कल्पवासी देव और मनुष्यों द्वारा वन्दनीय देवाधिदेव वर्धमान श्री वीरनाथ अर्हन्तदेव को नमस्कार करके मैं (अमोघवर्ष) इस प्रश्नोत्तररत्नमालिका को कहता हूँ॥1॥

कः खलु नालंक्रियते, दृष्टादृष्टार्थसाधनपटीयान्।
कण्ठस्थितया विमल-प्रश्नोत्तर-रत्नमालिकया॥2॥

प्रत्यक्ष और आगम में कहे गये पदार्थों के जानने में चतुर ऐसा कौन-सा पुरुष है? जो कण्ठ में धारण की हुई निर्मल प्रश्नोत्तर रत्नमाला द्वारा अपने आप का श्रृंगार न करे अर्थात् निर्मल प्रश्नोत्तर रत्नमाला द्वारा स्वतः को अलंकृत न करे? तात्पर्य यह है कि ऐसा कोई भी नहीं है। **भावार्थ**—इस रत्नमाला के धारण करने से सभी सुशोभित होंगे॥2॥

भगवन् किमुपादेयम्? गुरुवचनं हेयमपि च किमकार्यम्।
को गुरुरधिगततत्त्वः? सत्त्वाहिताभ्युद्यतः सततम्॥3॥

प्रश्न 1 ला—हे भगवन्, इस संसार में ग्रहण करने योग्य क्या है? **उत्तर**—गुरु के अच्छे वचन। **प्रश्न 2 रा**—त्याग करने योग्य

क्या है ? **उत्तर**—निन्दनीय कार्य अर्थात् ऐसे कार्य जिनको कार्य-रूप में परिणत करने से संसार में निन्दा हो। **प्रश्न 3 रा**—गुरु कौन है ? **उत्तर**—जो सदैव (हमेशा) प्राणियों के हित करने के लिए तत्पर हो और जो सम्पूर्ण तत्त्वों का यथार्थ (में) ज्ञाता हो ॥3॥

त्वरितं किं कर्तव्यं ? विदुषा संसारसंततिच्छेदः।
किं मोक्षतरोर्बीजं ? सम्यग्ज्ञानं क्रियासहितम् ॥4॥

प्रश्न 4 था—विद्वानों को कौन-सा कार्य शीघ्र ही करना चाहिए ? **उत्तर**—संसार की परम्परा का छेद अर्थात् संसार में लगे रहनेवाले जन्म-मरणरूपी चक्र का नाश शीघ्र हो करना चाहिए तथा यही उनके लिए उचित है। **प्रश्न 5 वाँ**—मोक्षरूपी वृक्ष का बीज अर्थात् मूल क्या है ? **उत्तर**—सम्यक्चारित्र सहित सम्यग्ज्ञान ही है। लेकिन सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान दोनों ही साथ-साथ होनेवाले हैं तथा बिना सम्यग्दर्शन के सम्यग्ज्ञान हो ही नहीं सकता है इसलिए सम्यग्ज्ञान के कहने से सम्यग्दर्शन को भी सूचित कर दिया है। अतएव सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्-चारित्र ये तीनों मिलकर ही मोक्षरूपी वृक्ष के बीज हैं। 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः' ॥4॥

किं पथ्यदनं ? धर्मः, कः शुचिरिह यस्य मानसं शुद्धम्।
कः पण्डितो विवेकी किं विषमवधोरिता गुरवः ॥5॥

प्रश्न 6 वाँ—परलोक की यात्रा करनेवाले प्राणियों को मार्ग में पाथेय (कलेवा) क्या है ? **उत्तर**—केवल एक मात्र धर्म ही उनका कलेवा है। **प्रश्न 7 वाँ**—इस संसार में पवित्र कौन है ? **उत्तर**—जिस व्यक्ति का मन शुद्ध है वही पवित्र है। **प्रश्न 8 वाँ**—(कः पण्डितः) पण्डित कौन है ? **उत्तर**—(विवेकी) जिसको भले और बुरे का ज्ञान है। **प्रश्न 9 वाँ**—(किं विषम्) विष क्या

है ? **उत्तर**—(अवधीरिता गुरवः) गुरुओं का अपमान करना या तिरस्कार करना ही विष है ॥5॥

किं संसारे सारं ? बहुशोऽपि विचिन्त्यमानमिदमेव।
मनुजेषु दृष्टतत्त्वं ? स्वपरहितायोद्यतं जन्म ॥6॥

प्रश्न 10 **वाँ**—(किं संसारे सारं) इस संसार में तत्त्व क्या है ? अथवा इस संसार में सार क्या है ? **उत्तर**—(बहुशोऽपि विचिन्त्यमानमिदमेव मनुजेषु दृष्टतत्त्वम् स्वपरहितायोद्यतं जन्म) मनुष्य की योनि में ऐसा जन्म लेना जिसमें सम्पूर्ण तत्त्वों को देखा हो और पढ़ा हो तथा जो व्यक्ति सदैव अपने तथा दूसरों का भला करने में तत्पर रहे यही सार है, जिसे कि बहुत बार सोच-विचार करने के बाद आचार्यों ने निश्चय करके कहा है ॥6॥

मदिरेव मोहजनकः कः ? स्नेहः के च दस्यवो विषयाः।
का भववल्ली तृष्णाः ? को वैरी नन्वनुद्योगः ॥7॥

प्रश्न 11 **वाँ**—(मदिरेव मोहजनकः कः) मदिरा की भाँति मोह उत्पादक कौन है ? **उत्तर**—(स्नेहः) प्रेम वा मोह। **प्रश्न** 12 **वाँ**—(के च दस्यवः) इस जीव के रत्नों का हरण करनेवाले कौन हैं ? **उत्तर**—(विषयाः) इन्द्रियों के विषय हैं। **प्रश्न** 13 **वाँ**—(का भववल्ली) संसार को बढ़ानेवाली बेल कौन है ? **उत्तर**—(तृष्णा) भोगों को तृप्त करने की इच्छा या आशा। **प्रश्न** 14 **वाँ**—(को वैरी) जीव का शत्रु कौन है ? **उत्तर**—(नन्वनुद्योगः) किसी प्रकार का उद्यम या उद्योग न करना ही निश्चय से इस जीव का शत्रु है ॥7॥

कस्माद्भयमिह मरणा दन्धादपि को विशिष्यते रागी।
कः शूरो यो ललनालोचनबाणैर्न च व्यथितः ॥8॥

प्रश्न 15 **वाँ**—(कस्माद्भयमिह) इस संसार में व्यक्ति को

भय किससे होता है ? **उत्तर**—(मरणात्) मृत्यु से सभी को भय होता है। **प्रश्न** 16 **वाँ**—(अन्धादपि को विशिष्यते) नेत्रहीन व्यक्ति से और भी अधिक अन्धा कौन है ? **उत्तर**—(रागी) रागयुक्त जीव जो व्यक्ति मोह में फँसा हुआ है। **प्रश्न** 17 **वाँ**—(कः शूरः) शूरवीर कौन है ? **उत्तर**—(यो ललनालोचनबाणैर्न च व्यथितः) जो पुरुष स्त्री के चञ्चल नेत्रों के तीव्र कटाक्ष से व्यथित नहीं हुआ है ॥8॥

पातुं कर्णाञ्जलिभिः किममृतमिव बुध्यते ? सदुपदेशः।
किं गुरुताया मूलं ? यदेतदप्रार्थनं नाम ॥9॥

प्रश्न 18 **वाँ**—(पातु कर्णाञ्जलिभिः किममृतमिव बुध्यते) कर्णरसी अंजुलि से अमृत के समान पीने योग्य कौन-सा पदार्थ है ? **उत्तर**—(सदुपदेशः) अच्छे श्रेष्ठ उपदेश। **प्रश्न** 19 **वाँ**—(किं गुरुताया मूलं) गम्भीरता की जड़ क्या है ? **उत्तर**—(यदेतदप्रार्थनं नाम) जो व्यक्ति कभी भी स्वतः के लिए किसी प्रकार की (किसी से) याचना नहीं करता; वही गुरुता है या गम्भीरता है ॥9॥

किं गहनं ? स्त्रीचरितं कश्चतुरो ? यो न खण्डितस्तेन।
किं दारिद्रयमसन्तोष एव किं लाघवं याच्ञा ॥10॥

प्रश्न 20 **वाँ**—(किं गहनं) इस संसार में कठिनाई से जानने योग क्या है ? अथवा इस संसार में ऐसा कौन सा कार्य है जिसे जानने में कठिनाइयों का अनुभव करना पड़ता है ? **उत्तर**—(स्त्री-चरितं) स्त्री का चरित्र। **प्रश्न** 21 **वाँ**—(कश्चतुरः) विवेकी व्यक्ति कौन है ? **उत्तर**—(यो न खण्डितस्तेन) वही व्यक्ति विवेकी है जो उन स्त्रियों के चरित्र से खण्डित नहीं हुआ है। **प्रश्न** 22 **वाँ**—(किं दारिद्रयम्) दरिद्रता क्या है ? **उत्तर**—(असन्तोष एव) संतोष का न होना ही दरिद्रता है। **प्रश्न**

23 **वाँ**—(किं लाघवं) लघुता (नीचता) क्या है ? **उत्तर**—(याञ्चा) स्वतः के लिए ही दूसरों से माँगना ही परम लघुता है ॥10॥

किं जीवितमनवद्यं, किं जाड्यं पाटवेऽप्यनभ्यासः।
को जागर्ति ? विवेकी; का निद्रा ? मूढता जन्तोः ॥11॥

प्रश्न 24 **वाँ**—(किं जीवितं) संसार में, जीवित क्या है ? **उत्तर**—(अनवद्यं) संसार में पाप रहित जीना ही जीवित रहना है। या पाप रहित जीना ही जीवन है। **प्रश्न** 25 **वाँ**—(किं जाड्यं) मूर्खता क्या है ? **उत्तर**—(पाटवेऽप्यनभ्यासः) चतुर होने पर भी विद्याभ्यास न करना ही मूर्खता है। **प्रश्न** 26 **वाँ**—(को जागर्ति) संसार में कौन सा व्यक्ति जागता है ? **उत्तर**—(विवेकी) जो व्यक्ति बुद्धिमान है वही जागता है। **प्रश्न** 27 **वाँ**—(का निद्रा) निद्रा क्या है ? **उत्तर**—(मूढता जन्तोः) व्यक्तियों की मूर्खता ही सबसे बड़ी निद्रा है ॥11॥

नलिनीदलगतजललवतरलं किं यौवनं धनमथायुः।
के शशधरकरनिकरानुकारिणः सज्जना एव ॥12॥

प्रश्न 28 **वाँ**—(नलिनीदलगतजललवतरलं किं) कमलिनी के पत्ते पर पड़े हुए जल की बूँद के समान चञ्चल क्या है ? **उत्तर**—(यौवनं धनमथायुः) युवावस्था, सम्पत्ति तथा आयु ये तीनों ही क्षणस्थायी हैं। **प्रश्न** 29 **वाँ**—(के शशधरकरनिकरानुकारिणः) चन्द्रमा की किरणों के समूह का अनुकरण करनेवाले चन्द्रमा के समान शीतल और सुख देनेवाला कौन है ? **उत्तर**—(सज्जना एव) सज्जन पुरुष ॥12॥

को नरकः ? परवशता, किं सौख्यं ? सर्वसंगविरतिर्या ।
किं सत्यं ? भूतहितं किं प्रेयः ? प्राणिनामसवः ॥13॥

प्रश्न 30 **वॉं**—(को नरकः) नरक क्या है ? **उत्तर**—(परवशता) किसी के अधीन रहना ही नरक निवास है। लोकोक्ति है—पराधीन सपनेहु सुख नाहीं। **प्रश्न** 31 **वाँ**—(किं सौख्यं) सुख क्या है ? **उत्तर**—(सर्वसंगविरतिर्या) सारे परिग्रहों को छोड़कर अपनी आत्मा में ही लीन होना सच्चा सुख है। **प्रश्न** 32 **वाँ**—(किं सत्यं) सत्य क्या है ? **उत्तर**—(भूतहितं) प्राणिमात्र का हित करना ही सत्यता है। **प्रश्न** 33 **वाँ**—(किं प्रेयः प्राणिनाम्) प्राणियों को कौन सी वस्तु अधिक प्रिय है ? **उत्तर**—(असवः) इस संसार में प्राणियों को प्राण ही सबसे अधिक प्रिय हैं ॥13॥

किं दानमनाकाङ्क्षं, किं मित्रं ? यन्निवर्त्तयति पापात् ।
कोऽलङ्कारः ? शीलं, किं वाचां मण्डनं ? सत्यम् ॥14॥

प्रश्न 34 **वाँ**—(किं दानं) दान क्या है ? उत्तर—(अनाकांक्षं) जिस दान में किसी प्रकार की आकांक्षा न की जावे, वही दान श्रेष्ठ है। **प्रश्न** 35 **वाँ**—(किं मित्रं) मित्र कौन है ? **उत्तर**—(यन्निवर्त्तयति पापात्) जो व्यक्ति पाप से रक्षा करे वही सच्चा मित्र है। **प्रश्न** 36 **वाँ**—(कोऽलंकारः) मनुष्य का आभूषण क्या है ? **उत्तर**—(शीलं) शील (ब्रह्मचर्य) ही मनुष्यों का सच्चा आभूषण है। **प्रश्न** 37 **वाँ**—(किं वाचां मण्डनं) वाणी का भूषण क्या है ? **उत्तर**—(सत्यम्) सदा सत्य बोलना ही वाणी का आभूषण है ॥14॥

किमनर्थफलं मानसमसङ्गतं का सुखावहा ? मैत्री ।
सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः ? सर्वथा त्यागः ॥15॥

प्रश्न 38 **वाँ**—(किं अनर्थफलं) अनर्थ का फल क्या है ?

उत्तर—(मानसमसंगतं) मन की असंगतता होना ही अनर्थ का फल है। **प्रश्न** 39 **वाँ**—(का सुखावहा) सुख देनेवाली कौन सी वस्तु है? **उत्तर**—(मैत्री) सभी प्राणियों से मित्रता रखना ही सुख देनेवाली वस्तु है। **प्रश्न** 40 **वाँ**—(सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः) सभी दुःखों का नाश करने में कौन चतुर है? **उत्तर**—(सर्वथा त्यागः) परिग्रह आदि का बिल्कुल ही त्याग करना सब व्यसनों (दुःखों) का नाश करनेवाला है ॥15॥

कोऽन्धो योऽकार्यरतः, को बधिरो ? यः शृणोति न हितानि।
को मूको ? यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति ॥16॥

प्रश्न 41 **वाँ**—(कोऽन्धः) अंधा कौन है? **उत्तर**—(योऽकार्यरतः) जो व्यक्ति दूसरों द्वारा निन्दा करने योग्य कार्य करने में रत हों। **प्रश्न** 42 **वाँ**—(को बधिरः) बहिरा कौन है? **उत्तर**—(यः शृणोति न हितानि) जो व्यक्ति अपने ही हित के वचनों को नहीं सुनता है, वही बहिरा है। **प्रश्न** 43 **वाँ**—(को मूकः) गूंगा कौन है? **उत्तर**—(यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति) जो व्यक्ति समय पड़ने पर भी मीठे वचन बोलना नहीं जानता वही गूंगा है ॥16॥

किं मरणं ? मूर्खत्वं, किं चानर्घ्यं यदवसरे दत्तम्।
आमरणात्तिक शल्यं, प्रच्छन्नं यत्कृतमकार्यम् ॥17॥

प्रश्न 44 **वाँ**—मरण क्या है? **उत्तर**—(मूर्खत्वं) जिस व्यक्ति में बुद्धि नहीं है, मूर्खता भरी पड़ी है वही मरण है। **प्रश्न** 45 **वाँ**—(किं चानर्घ्यं) अमूल्य क्या है? **उत्तर**—(यदवसरे दत्तम्) अवसर पर दिया गया दान ही अमूल्य है। **प्रश्न** 46 **वाँ**—(आमरणात्तिक शल्यं) अन्त समय तक (मृत्युपर्यंत) सुई के समान हृदय में चुभनेवाला क्या है? **उत्तर**—(प्रच्छन्नं यत्कृतमकार्यम्) वह कुकर्म जो गुप्तरीति से किया गया है ॥17॥

कुत्र विधेयो यत्नो ? विद्याभ्यासे सदौषधे दाने।
अवधीरणा क्व कार्या ? खलपरयोषित्परधनेषु ॥18॥

प्रश्न 47 **वाँ**—(कुत्र विधेयो यत्नो) किस विषय में प्रयत्न करना चाहिए ? **उत्तर**—(विद्याभ्यासे सदौषधे दाने) विद्या के अभ्यास में और शुद्ध दवाइयों के दान में हमेशा प्रयत्न करना चाहिए। **प्रश्न** 48 **वाँ**—(अवधीरणा क्व कार्या) निन्दा किन-किन (कार्यों) की करनी चाहिए ? **उत्तर**—(खलपरयोषित्परधनेषु) दुष्ट व्यक्ति, पर स्त्री और दूसरे के द्रव्य में ॥18॥

काहर्निशमनुचिन्त्या ? संसारासारता न च प्रमदा।
का प्रेयसी विधेया ? करुणादाक्षिण्यमपि मैत्री ॥19॥

प्रश्न 49 **वाँ**—(काहर्निशमनुचिन्त्या) रात दिन किसका चिन्तन करना चाहिए ? **उत्तर**—(संसारासारता न च प्रमदा) संसार की क्षण भंगुरता का सदैव चिन्तन करना चाहिए। इसके विपरीत किसी स्त्री के स्वरूप का नहीं। **प्रश्न** 50 **वाँ**—(का प्रेयसी विधेया) सँसार मे अपना प्रिय किसे बनाना चाहिए ? **उत्तर**—(करुणादाक्षिण्यमपि मैत्री) दया, चतुराई तथा मित्रता को ही प्रिय बनाना चाहिए ॥19॥

कण्ठगतैरप्यसुभिः कस्यात्मा नो समर्प्यते जातु ?
मूर्खस्य विषादस्य च गर्वस्य तथा कृतघ्नस्य ॥20॥

प्रश्न 51 **वाँ**—(कण्ठगतैरप्यसुभिः कस्यात्मा नो समर्प्यते जातु) कण्ठ में प्राण अटक जाने पर भी स्वतः को किसके अधीन नहीं करना चाहिए ? **उत्तर**—(मूर्खस्य विषादस्य च गर्वस्य तथा कृतघ्नस्य) मूर्ख पुरुष, दुखी, अभिमानी तथा उपकार न मानने-वाले पूरुष के अधीन अपने को नहीं करना चाहिए ॥20॥

कः पूज्यः ? सद्वृत्तः कमधनमाचक्षते ? चलितवृत्तम् ।
केन जितं जगदेतत् ? सत्यतितिक्षावता पुंसा ॥21॥

प्रश्न 52 **वाँ**—(कः पूज्यः) पूज्य कौन है ? **उत्तर**—(सद्वृत्तः) जिस व्यक्ति का चरित्र श्रेष्ठ है वही पूज्य है। **प्रश्न** 53 **वाँ**—(कमधनमाचक्षते) धनहीन किसे कहते हैं ? **उत्तर**—(चलित-वृत्तम्) जो व्यक्ति अपनी प्रतिज्ञा का पालन नहीं करता है, वही निर्धन है। **प्रश्न** 54 **वाँ**—(केन जितं जगदेतत्) इस संसार को किसने जीता है ? **उत्तर**—(सत्य-तितिक्षावता पुंसा) सच्चे व शांत परिणामवाले व्यक्तियों ने ही इस संसार को जीता है ॥21॥

कस्मै नमः सुरैरपि सुतरां क्रियते ? दयाप्रधानाय ।
कस्मादुद्विजितव्यं, संसारारण्यतः सुधिया ॥22॥

प्रश्न 55 **वाँ**—(कस्मै नमः सुरैरपि सुतरां क्रियते) देवता लोग भी किसे नमस्कार करते हैं ? **उत्तर**—(दयाप्रधानाय) जो व्यक्ति दया रूपी धर्म का पालन करने में श्रेष्ठ है उसको देवता भी नमस्कार करते हैं। **प्रश्न** 56 **वाँ**—(कस्मादुद्विजितव्यं) इस संसार में भय किससे करना चाहिए ? **उत्तर**—(संसारारण्यतः सुधिया) बुद्धिमान् व्यक्ति को संसार रूपी महान् अटवी से भय करना चाहिए ॥22॥

कस्य वशे प्राणिगणः ? सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य ।
क्व स्थातव्यं न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टलाभाय ॥23॥

प्रश्न 57 **वाँ**—(कस्य वशे प्राणिगणः) सभी प्राणी किसके वश में रहते हैं ? **उत्तर**—(सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य) सदैव सत्य और प्रिय वचन बोलनेवाले तथा विनयी व्यक्ति के वश में सभी प्राणी रह सकते हैं। **प्रश्न** 58 **वाँ**—(क्व स्थातव्यं) किस स्थान पर ठहरना उचित है ? **उत्तर**—(न्याय्ये पथि दृष्टादृष्ट-लाभाय) दृष्ट प्रत्यक्ष-(धन की प्राप्ति के लिए) अदृष्ट परोक्ष-

(पुण्य आदि के लाभ) के लिए न्यायमार्ग में ठहरना ही उचित है ॥23॥

विद्युद्विलसितचपलं किं ? दुर्जनसंगतं युवत्यश्च ।
कुलशीलनिष्प्रकम्पाः के कलिकालेऽपि सत्पुरुषाः ॥24॥

प्रश्न 59 **वाँ**—(विद्युद्विलसितचपलं किं) बिजली की चमक की भाँति चञ्चल क्या है ? **उत्तर**—(दुर्जनसंगतं युवतयश्च) दुष्ट व्यक्तियों की संगति तथा स्त्रियों का हास-विलास । **प्रश्न** 60 **वाँ**—(कुलशैलनिष्प्रकम्पाः के कलिकालेऽपि) इस कलियुग में भी कुलाचल पर्वतों की तरह अचल कौन है ? **उत्तर**—(सत्पुरुषाः) सज्जन पुरुष ॥24॥

किं शोच्यं ? कार्पण्यं सति विभवे किं प्रशस्यमौदार्यम् ।
तनुतरवित्तस्य तथा, प्रभविष्णोर्यत्सहिष्णुत्वम् ॥25॥

प्रश्न 61 **वाँ**—(किं शोच्यं) इस संसार में खेद प्रकट करने योग्य क्या है ? **उत्तर**—(कार्पण्यं) कंजूसी । **प्रश्न** 62 **वाँ**—(सति विभवे किं प्रशस्यं) ऐश्वर्य के होते हुए भी प्रशंसनीय क्या है ? **उत्तर**—(औदार्यम्) उदारता (दयालुता) । **प्रश्न** 63 **वां**—(तनुतरवित्तस्य किं प्रशस्यम्) जो व्यक्ति अत्यंत ही धनहीन हैं उनके लिए प्रशंसा के योग्य क्या है ? **उत्तर**—(तथा) वही उदारता । **प्रश्न** 64 **वां**—(प्रभविष्णोः किं प्रशस्यं) बलवान पुरुषों का कौन सा कार्य प्रशंसनीय है अथवा क्या प्रशंसनीय है ? **उत्तर**—(यत्सहिष्णुत्वं) सहनशीलता-क्षमा ॥25॥

चिंतामणिरिव दुर्लभमिह, किं ननु कथयामि चतुर्भद्रम् ।
किं तद्वदन्ति भूयो, विधूततमसो विशेषेण ॥26॥

प्रश्न 65 **वां**—(चिंतामणिरिव दुर्लभमिह किम्) इस संसार में चिन्तामणि रत्न के समान दुर्लभ क्या है ? **उत्तर**—(ननु कथयामि चतुर्भद्रम्) मैं निश्चय से (दृढ़तापूर्वक) कहता हूँ कि इस

संसार में चार भद्र ही नितान्त दुर्लभ हैं। **प्रश्न 66 वाँ**—(किं तद्वदन्ति भूयो विधूततमसो विशेषेण) जिनका अज्ञानरूपी अंधकार नष्ट हो गया है ऐसे महापुरुष उन चार भद्रों के स्वरूपविशेष रूप से किस प्रकार कहते हैं ? ।।26।।

दानं प्रियवाक्सहितं, ज्ञानमगर्वं क्षमान्वितं शौर्यम् ।
त्यागसहितं च वित्तं दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम् ।।27।।

उत्तर—(दानं प्रियवाक्सहितं ज्ञानमगर्वं क्षमान्वितं शौर्यम् । त्यागसहितं च वित्तं दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम्) इस संसार में ये भद्रता (कल्याण) अत्यंत दुर्लभ हैं—मीठे वचनों सहित दान देना, ज्ञान होते हुए भी गर्व न करना, वीरता होते हुए भी क्षमा धारण करना, धन होते हुए भी दान देते रहना ।।27।।

उपसंहार

इति कण्ठगता विमला प्रश्नोत्तररत्नमालिका येषाम् ।
ते मुक्ताभरणा अपि विभान्ति विद्वत्समाजेषु ।।28।।

जिन व्यक्तियों के कण्ठ में यह निर्मल प्रश्नोत्तर रूपी माला रहती है, वे व्यक्ति आभरण रहित होते हुए भी अर्थात् मोतियों के आभूषण नहीं धारण करते हैं फिर भी विद्वानों की सभा में शोभायमान होते हैं ।।28।।

विवेकात्त्यक्तराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका ।
रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलंकृति ।।29।।

जिसने विवेक के कारण राज्य को छोड़ा है ऐसे भूतपूर्व राजा अमोघवर्ष साधु ने सज्जनों के लिए उत्तम भूषण के समान यह रत्नमाला रची है ।।29।।

श्रीमद्राजर्ष्यमोघवर्षकृता
प्रश्नोत्तररत्नमालिका समाप्ता ।

●

अपरा प्रश्नोत्तररत्नमालिका

आर्या

किमिहाराध्यं भगवन्? रत्नत्रयतेजसा प्रतपमानम्।
शुद्धं निजात्मतत्त्वं, जिनरूपं सिद्धचक्रं च ॥1॥

प्रश्न 1 ला—(किमिहाराध्यं भगवन्) हे भगवान्, इस संसार में आराधना करने योग्य कौन है? **उत्तर**—(रत्नत्रयतेजसा प्रतपमानं शुद्धं निजात्मतत्त्वं जिनरूपं सिद्धचक्रं च) रत्नत्रय के तेज से दीप्तिमान अपना शुद्ध आत्मतत्त्व, जिनेन्द्र देव का सच्चा स्वरूप और सिद्धों का समूह ॥ 1 ॥

को देवो? निखिलज्ञो निर्दोषः किं श्रुतं? तदुद्दिष्टम्।
को गुरुरविषयवृत्तिर्निर्ग्रन्थः स्वस्वरूपस्थः ॥2॥

प्रश्न 2 रा—(को देवः) इस संसार में देवता कौन है? **उत्तर**—(निखिलज्ञो निर्दोषः) जो अठारह प्रकार के दोषों से रहित और सम्पूर्ण पदार्थों को जानने वाला है वही देवता है। **प्रश्न 3 रा**—(किं श्रुतम्) शास्त्र क्या है? **उत्तर**—(तदुद्दिष्टम्) जिसे उक्त निर्दोष सर्वज्ञ देव ने कहा है वही शास्त्र है। **प्रश्न 4 था**—(को गुरुः) इस संसार में गुरु कौन है? **उत्तर**—(अविषयवृत्तिर्निर्ग्रन्थः स्वस्वरूपस्थः) जिस व्यक्ति की प्रवृत्ति विषयों में (वासनाओं में) नहीं है तथा जो परिग्रह रहित है और अपने ही आत्मस्वरूप में स्थिर रहता है, वही गुरु है ॥ 2 ॥

किं दुर्लभं? नृजन्म, प्राप्येदं भवति किंच कर्त्तव्यम्।
आत्महितमहितसंगत्यागो रागश्च गुरुवचने ॥3॥

प्रश्न 5 **वां**—संसार में दुर्लभ क्या है ? **उत्तर**—(नृजन्म) मनुष्य योनि में जन्म लेना ही दुर्लभ है। **प्रश्न** 6 **वां**—(प्राप्येदं भवति किं च कर्तव्यम्) मनुष्य जन्म को पाकर हमें क्या करना चाहिए ? **उत्तर**—(आत्महितमहितसङ्गत्यागो रागश्च गुरुवचने) अपनी आत्मा की भलाई, अहितकारी परिग्रह का त्याग तथा गुरु के वचनों में प्रेम करना चाहिए ॥ 3 ॥

का मुक्तिरखिलकर्मक्षतिरस्याः प्रापकश्च को मार्गः।
दृष्टिर्ज्ञानं वृत्तं, कि यत्सुखं तत्र चानन्तम् ॥4॥

प्रश्न 7 **वां**—(का मुक्तिः) मोक्ष क्या है ? **उत्तर**—(अखिल-कर्मक्षतिः) सभी प्रकार के कर्मों का नाश होना ही मोक्ष है। **प्रश्न** 8 **वां**—(अस्याः प्रापकश्च को मार्गः) मोक्ष की (उसकी) प्राप्ति का कौन सा मार्ग है ? **उत्तर**—(दृष्टिर्ज्ञानं वृत्तम्) सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र की एकता ही मोक्ष का मार्ग है। **प्रश्न** 9 **वां**—(कियत्सुखं तत्र च) और उस मोक्ष में कितना सुख है ? **उत्तर**—(अनन्तम्) जिसका कोई आदि अन्त नहीं है ॥ 4 ॥

कि हिंसाया मूलं ? क्रोधः कात्मान्यवञ्चिका ? माया।
कोऽत्र गुरुष्वपि पूजातिक्रमहेतुः ? खलो मानः ॥5॥

प्रश्न 10 **वां**—(किं हिंसाया मूलम्) हिंसा की जड़ (कारण) क्या है ? **उत्तर**—(क्रोधः) क्रोध। **प्रश्न** 11 **वां**—(कात्मान्य-वञ्चिका) अपने आपको तथा दूसरों को ठग लेनेवाली कौन है ? **उत्तर**—(माया) छल-कपट-धोखा। **प्रश्न** 12 **वां**—(कोऽत्र गुरुष्वपि पूजातिक्रमहेतुः) गुरुजनों के आदर सत्कार का उल्लंघन करनेवाला कौन है ? **उत्तर**—(खलो मानः) दुष्ट प्रवृत्ति के व्यक्ति का अहंकार ॥ 5 ॥

किमनर्थस्य निदानं, लोभः किं मण्डनं च शुचि शीलम् ।
को महिमा ? विद्वत्ता, विवेकिता का ? व्रताचरणम् ॥6॥

प्रश्न 13 **वां**—(किमनर्थस्य निदानम्) अनिष्ट का कारण क्या है ? **उत्तर**—(लोभ) लालच । **प्रश्न** 14 **वां**—(किं मण्डनं च) और (शरीर का) आभूषण क्या है ? **उत्तर**—(शुचिशीलम्) पवित्र ब्रह्मचर्य । **प्रश्न** 15 **वां**—(को महिमा) महिमा क्या है ? **उत्तर**—(विद्वत्ता) बुद्धिमत्ता । **प्रश्न** 16 **वां**—(विवेकिता का) विचारशीलता क्या होती है ? **उत्तर**—(व्रताचरणं) लिए हुए व्रतों का आचरण (पालन) करना ही विचारशीलता है ॥ 6 ॥

मनसापि किं न चिन्त्यं ? परदाराः परधनं परापकृतिः ।
कीदृग्वचो न वाच्यं ? परुषं पीडाकरं कटुकम् ॥7॥

प्रश्न 17 **वां**—(मनसापि किं न चिन्त्यम्) मन से कभी भी किसका चिन्तवन नहीं करना चाहिए ? **उत्तर**—(परदाराः परधनं परापकृतिः) दूसरे की स्त्री का, दूसरे के धन का और दूसरे के अपकार का कभी भी चिन्तवन नहीं करना चाहिए । **प्रश्न** 18 **वां**–(कीदृग्वचो न वाच्यम्) कैसे वचन नहीं बोलने चाहिए ? **उत्तर**—(परुषं पीडाकरं कटुकम्) जो कठोर, दुःख देनेवाला हो और कड़ुवा हो । कहा है—"सत्यं ब्रूहि परं अप्रियं सत्यं मा ब्रूहि" सत्य बोलो किन्तु अप्रिय सत्य मत बोलो ॥ 7 ॥

किं हातव्यं सततं ? पैशुन्यं व्यसनिता च मात्सर्य्यम् ।
किमकरणीयं ? यत्परलोकविरुद्धं मनोऽनिष्टम् ॥8॥

प्रश्न 19 **वाँ**—(किं हातव्यं सततम्) सदैव त्याग करने योग्य क्या है ? **उत्तर**—(पैशुन्यं व्यसनिता च मात्सर्यम्) किसी की चुगली करना, सातों व्यसन और दूसरों की न सह सकना, ये बातें सदा त्याग करने योग्य हैं । **प्रश्न** 20 **वाँ**—(किमकरणीयम्)

न करने योग्य कौन से कार्य हैं ? **उत्तर**—(यत्परलोकविरुद्धं मनोऽनिष्टम्) जो कार्य परलोक से विरुद्ध और मन का अनिष्ट करने वाले हों ऐसे कार्य नहीं करने चाहिए ॥ 8 ॥

शम्पेव चञ्चला का ? सम्पत्सत्काव्यमिव किमनवद्यम् ?
जीवितमधर्मरहितं, कलङ्कमुक्तं यशोयुक्तम् ॥9॥

प्रश्न 21 **वाँ**—(शम्पेव चञ्चला का) बिजली के समान चपल क्या है ? **उत्तर**—(सम्पत्) लक्ष्मी-सम्पत्ति । **प्रश्न** 22 **वाँ**—(सत्काव्यमिव किमनवद्यम्) उत्तम काव्य के समान प्रशंसनीय क्या है ? **उत्तर**—(जीवितमधर्मरहितं कलंकमुक्तं यशोयुक्तम्) ऐसा जीवन प्रशंसनीय है जो पाप रहित हो, कलंक रहित हो और यश से भरा हुआ हो ॥ 9 ॥

किं दिनकृत्यं जिनपतिपूजासामयिकगुरूपास्तिः ।
त्रिविधशुचिपात्रदानं, शास्त्राध्ययनं च सानन्दम् ॥10॥

प्रश्न 23 **वाँ**—(किं दिनकृत्यम्) प्रतिदिन करने योग्य कर्म कौन से हैं ? **उत्तर**— जिनपतिपूजा सामयिकगुरूपास्तिः त्रिविध-शुचिपात्रदानं शास्त्राध्ययनं च सानन्दम्) जिनेन्द्रदेव की पूजा, सामयिक, गुरुदेव की उपासना, तीन प्रकार के पवित्र पात्रों को दान देना तथा प्रसन्नता के साथ शास्त्रस्वाध्याय करना ॥10॥
इसी आशय का श्लोक—

देवपूजा गुरूपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः ।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने ॥

इत्यपरा प्रश्नोत्तरमालिका समाप्ता ।

श्रीमद् राजर्षि अमोघवर्षकृता प्रश्नोत्तररत्नमालिका

પ્રશ્નોત્તરરત્નમાલિકા (ગુજરાતી)

પ્રાણલાલભાઈ દેસાઈ કૃત ગુજરાતી અર્થ

आर्या

प्रणिपत्य वर्द्धमानं प्रश्नोत्तररत्नमालिकां वक्ष्ये ।
नागनरामरवन्द्यं देवं देवाधिपं वीरम् ।।१।।

૧. ભવનવાસી દેવો તથા કલ્પવાસી દેવો તેમ જ મનુષ્યો દ્વારા વંદનીય, દેવાધિ- દેવ શ્રી વર્ધમાન સ્વામી શ્રી વીરનાથ ભગવંત - અર્હંતદેવને હું (અમોઘવર્ષ) નમસ્કાર કરીને આ પ્રશ્નોત્તર માળા કહું છું.

कः खलु नालंक्रियते दृष्टादृष्टार्थसाधनपटीयान् ।
कण्ठस्थितया विमलप्रश्नोत्तररत्नमालिकया ।।२।।

(સ્વસંવેદન) પ્રત્યક્ષ અને આગમજ્ઞાન દ્વારા પ્રરૂપિત પદાર્થોને જાણવામાં પ્રવીણ એવા કોણ જ્ઞાની હોય કે જે આ નિર્મળ પ્રશ્નોત્તર રત્નમાળાને કંઠમાં ધારણ કરીને પોતાને અલંકૃત ન કરે! અર્થાત્ તેવા જ્ઞાની આ નિર્મળ પ્રશ્નોત્તરરત્નમાળા વડે સ્વયં અલંકૃત બને જ. એ પ્રમાણે, આ રત્નમાળાને જે ધારણ કરશે તેની શોભા વધશે.

भगवन् किमुपादेयम् गुरुवचनं हेयमपि च किमकार्यम् ।
को गुरुरधिगततत्त्वः सत्त्वहिताभ्युद्यतः सततम् ।। ३ ।।

પ્રશ્ન ૧. હે ભગવંત! આ સંસારમાં ગ્રહણ કરવા યોગ્ય ઉપાદેય શું?
ઉત્તર ૧. ગુરુનાં સત્યાર્થ વચનો.
પ્રશ્ન ૨. હે ભગવંત! આ સંસારમાં તજવા યોગ્ય - હેય - શું?

ઉત્તર ૨. અકાર્ય, એટલે એવું કાર્ય કે જેને પરિણામે સંસારમાં નિન્દા થાય; અર્થાત નિન્દ્ય કાર્ય હેય છે.

પ્રશ્ન ૩. ગુરુ કોણ છે?

ઉત્તર ૩. જે નિરંતર પ્રાણીઓના હિતમાં જ સદા તત્પર રહે છે તથા જે સંપૂર્ણ તત્ત્વોના યથાર્થ જ્ઞાતા છે તે ગુરુ છે.

त्वरितं किं कर्तव्यं विदुषा संसारसंततिच्छेदः ।
किं मोक्षतरोर्बीजं सम्यग्ज्ञानं क्रियासहितम् ।। ४ ।।

પ્રશ્ન ૪. પંડિત જનોએ કયું કાર્ય શીઘ્ર ત્વરાએ જ કરવું જોઈએ?

ઉત્તર ૪. સુજ્ઞ જીવે સંસારની પરંપરાનો છેદ કરવો તે કર્તવ્ય છે. અર્થાત્ સંસારમાં જીવને અનાદિથી જન્મ-મરણ રૂપી પરિભ્રમણ કરાવનાર જે મોહચક્ર છે તેનો નાશ શીઘ્ર કરવો જોઈએ.

પ્રશ્ન ૫. મોક્ષ રૂપી વૃક્ષનું મૂળ – બીજ શું છે?

ઉત્તર ૫. સમ્યગ્ ચારિત્ર સહિત જ્ઞાન જ છે. સમ્યગ્ દર્શન અને સમ્યગ્-જ્ઞાન એ બન્ને સહભાવી સહવર્તી છે. સમ્યગ્ દર્શન વિના જ્ઞાન તે સમ્યગ્ ન જ હોઈ શકે માટે સમ્યગ્ જ્ઞાન કહેતાં તે સાથે સમ્યગ્ દર્શન નિયમથી હોય છે. એ રીતે સમ્યગ્ દર્શન સમ્યગ્ જ્ઞાન અને સમ્યગ્ ચારિત્ર એ ત્રણની એકતા એ જ મોક્ષરૂપી વૃક્ષનું મૂળ છે. "સમ્યગ્- દર્શન - જ્ઞાન - ચારિત્રાણિ મોક્ષમાર્ગઃ" ॥ ત. સુ. અ. ૧.

किं पथ्यदनं धर्मः कः शुचिरिह यस्य मानसं शुद्धम् ।
कः पण्डितो विवेकी किं विषमवधीरिता गुरवः ।। ५ ।।

પ્રશ્ન ૬. પરલોકગમન વખતે જીવોએ માર્ગમાં ભાતું શું લેવું?

ઉત્તર ૬. કેવળ ધર્મરૂપી ભાતું યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૭. આ સંસારમાં પવિત્ર કોણ છે?

ઉત્તર ૭. જે વ્યકિતનું ચિત્ત શુદ્ધ છે તે પવિત્ર છે.

પ્રશ્ન ૮. આ સંસારમાં પંડિત કોણ કહેવાય?

ઉત્તર ૮. જેને પોતાના હિત - અહિતનો વિવેક ઉદ્ભવ્યો છે તેવો જ્ઞાની પંડિત છે.

પ્રશ્ન ૯. આ સંસારમાં વિષમ વિષ કયું! છે?

ઉત્તર ૯. ગુરુનો તિરસ્કાર કરવો - તેનું અપમાન કરવું તે વિષમ વિષતુલ્ય છે.

किं संसारे सारं बहुशोऽपि विचिन्त्यमानमिदमेव ।
मनुजेषु दृष्टतत्त्वं स्वपरहितायोद्यतं जन्म ।। ६ ।।

પ્રશ્ન ૧૦. આ સંસારમાં સારભૂત પદાર્થ - તત્ત્વ શું કહેવાય?

ઉત્તર ૧૦. એવો મનુષ્ય કે જેને સમસ્ત તત્ત્વોનું દર્શન હોય - અને તત્ત્વનો અભ્યાસ વર્તતો હોય તેમ જ જે સદા સ્વ અને પર હિત માટે તત્પર હોય તેવો મનુષ્યજન્મ સારભૂત તત્ત્વ છે. આચાર્ય ભગવંતોએ બહુ ઊંડું ચિન્તવન કરી, વિચાર કરીને એવા સારભૂત તત્ત્વનો નિશ્ચય કરેલો છે.

मदिरेव मोहजनकः कः स्नेहः के च दस्यवः विषयाः ।
का भववल्ली तृष्णा को वैरी नन्वनुद्योगः ।। ७ ।।

પ્રશ્ન ૧૧. મોહરૂપી મદિરાને ઉત્પન્ન કરનાર કોણ છે?

ઉત્તર ૧૧. સ્નેહ - રાગ અને અજ્ઞાન તેને ઉત્પન્ન કરે છે.

પ્રશ્ન ૧૨. જીવના રત્નત્રય ગુણના હરનાર કોણ છે?

ઉત્તર ૧૨. પાંચ ઈન્દ્રિયોના વિષયો ગુણના હરનાર છે.

પ્રશ્ન ૧૩. સંસારમાં ભવની વૃદ્ધિ કરનાર વેલ કયાં છે?

ઉત્તર ૧૩. ભોગોની આસકિત - ભોગોની તૃષ્ણારૂપી વેલ ભવોની વૃદ્ધિ કરનાર છે.

પ્રશ્ન ૧૪. સંસારમાં જીવને શત્રુ કોણ છે?

ઉત્તર ૧૪. કોઈ પ્રકારનો ઉદ્યોગ - પુરુષાર્થ ન કરવો તેવો પ્રમાદ, જીવને નિશ્ચય શત્રુરૂપ છે.

कस्माद्भयमिह मरणादन्धादपि को विशिष्यते रागी ।
कः शूरो यो ललनालोचानबाणैर्न च व्यथितः ।। ८ ।।

પ્રશ્ન ૧૫. આ સંસારમાં જીવને ભય કોનો હોય છે?

ઉત્તર ૧૫. સંસારી જીવોને મરણનો ભય રહે છે.

પ્રશ્ન ૧૬. નેત્રાંધ જીવથી પણ અધિક અંધ કોણ કહેવાય છે?

ઉત્તર ૧૬. મોહમાં ફસાયેલો સરાગી જીવ અધિક અંધ છે.

પ્રશ્ન ૧૭. શૂરવીર કોણ કહેવાય?

ઉત્તર ૧૭. જે પુરુષ સ્ત્રીઓના ચંચળ નેત્રરૂપી કટાક્ષબાણ વડે વિંધાય નહિ-પીડા પામે નહિ – તે જીવ શૂરવીર કહેવાય છે.

पातुं कर्णाञ्जलिभिः किममृतमिव बुध्यते सदुपदेशः ।
किं गुरुतायाः मूलं यदेतदप्रार्थनं नाम ।।९ ।।

પ્રશ્ન ૧૮. કર્ણરૂપી અંજલિ વડે અમૃત સમાન પીવાયોગ્ય વસ્તુ શું છે?

ઉત્તર ૧૮. શ્રેષ્ઠ સત્ ઉપદેશ અમૃત રૂપ છે.

પ્રશ્ન ૧૯. ગુરુતા એટલે ગંભીરતાનું મૂળ શું છે?

ઉત્તર ૧૯. પોતાને માટે અન્ય કોઈ પણ વ્યકિત પાસે કોઈ પણ પ્રકારે ન માગવું-યાચના ન કરવી એ જ ગુરુતા અર્થાત્ ગંભીરતાનું મૂળ છે.

किं गहनं स्त्रीचरितम् कश्चत रो यो न खण्डितस्तेन ।
किं द्रारिद्रचमसन्तोष एव किं लाघवं याञ्चा ।।१०।।

પ્રશ્ન ૨૦. આ સંસારમાં ગહન અને દુર્ગમ વસ્તુ કઈ છે કે જેને જાણવી ઘણી કઠિન છે?

ઉત્તર ૨૦. સ્ત્રીનું ચરિત્ર ગહન અને દુર્ગમ છે.

પ્રશ્ન ૨૧. વિવેકી જીવ કોને કહેવાય?

ઉત્તર ૨૧. ગહન એવા સ્ત્રીચરિત્રથી જે ખંડિત ન થાય, ક્ષુબ્ધ ન બને તેવો ચતુર પુરુષ વિવેકી કહેવાય છે.

પ્રશ્ન ૨૨. સંસારમાં દરિદ્રતા શી વસ્તુ છે?

ઉત્તર ૨૨. અસંતોષ રહે એ જ જીવને માટે દરિદ્રતા છે.

પ્રશ્ન ૨૩. સંસારમાં લઘુતા કોને કહે છે?

ઉત્તર ૨૩. સ્વ અર્થે કોઈ પણ ચીજની અન્ય પાસે યાચના કરવી તે પરમ લઘુતા છે.

किं जीवितमनवद्यं किं जाड्यं पाटवेऽप्यनभ्यासः ।
को जागर्ति विवेकी का निद्रा मूढता जन्तोः ॥११॥

પ્રશ્ન ૨૪. સંસારમાં (સાચું) જીવન શું છે?

ઉત્તર ૨૪. નિષ્પાપ જીવન જીવવું એ સાચું જીવન છે.

પ્રશ્ન ૨૫. સંસારમાં મૂર્ખતા – જડતા - કોને કહે છે?

ઉત્તર ૨૫. ચતુર હોવા છતાં પણ જે વિદ્યા - અભ્યાસ ન કરે તે મૂર્ખતા છે.

પ્રશ્ન ૨૬. આ સંસારમાં જાગૃત કોણ કહેવાય?

ઉત્તર ૨૬. જે જીવ વિવેકી અને બુદ્ધિમાન છે તે જીવ જાગૃત છે.

પ્રશ્ન ૨૭. નિદ્રા શું છે?

ઉત્તર ૨૭. જીવને મૂઢતા એ જ ઘોર નિદ્રા છે.

नलिनीदलगतजललवतरलं किं यौवनं धनमथायुः ।
के शशधरनिकरानुकारिणः सज्जना एव ॥१२॥

પ્રશ્ન ૨૮. કમળપત્ર ઉપર પડેલાં જલબિંદુની માફક ચંચળ -ક્ષણિક શું છે?

ઉત્તર ૨૮. યૌવન, સંપત્તિ અને આયુષ્ય એ ત્રણ જળના તરંગ જેમ ચંચળ ને ક્ષણિક છે.

પ્રશ્ન ૨૯. ચંદ્રનાં કિરણોના સમૂહ જેવા શીતલ, સુખદાયક અને અનુકરણીય કોણ કહેવાય છે?

ઉત્તર ૨૯. સજ્જન - સત્ પુરુષો સદા શીતલ, સુખદાયક અને અનુકરણીય છે.

को नरकः परवशता किं सौख्यं सर्वसंगविरतिर्या ।
किं सत्यं भूतहितं किं प्रेयः प्राणिनामसवः ॥१३॥

પ્રશ્ન ૩૦. નરક શું છે?

ઉત્તર ૩૦. પરાધીનતા એ જ નરક નિવાસ છે. પરાધીન સ્વપ્ને પણ સુખ નહિ તેમ લોકમાં કહેવત છે.

પ્રશ્ન ૩૧. સુખ શું છે?

ઉત્તર ૩૧. સર્વસંગ – પરિત્યાગરૂપ અપરિગ્રહભાવ અર્થાત્ આત્મામાં જ લીનતા થવી એ સાચું સુખ છે.

પ્રશ્ન ૩૨. સત્ય શું છે?

ઉત્તર ૩૨. જીવમાત્રનું હિત ઈચ્છવું - કરવું - તે સત્ય છે.

પ્રશ્ન ૩૩. જીવોને અધિક પ્રિય શું છે?

ઉત્તર ૩૩. સંસારી જીવોને પોતાના પ્રાણ સર્વથી અધિક પ્રિય છે.

किं दानमनाकाङ्क्षं किं मित्रं यन्निवर्तयति पापात् ।
कोऽलङ्कारः शीलं किं वाचां मण्डनं सत्यम् ।। १४ ।।

પ્રશ્ન ૩૪. દાન શું છે?

ઉત્તર ૩૪. જે દાનમાં કોઈ પણ પ્રકારની આકાંક્ષા અને ઈચ્છા ન હોય તેવું દાન તે શ્રેષ્ઠ દાન છે.

પ્રશ્ન ૩૫. મિત્ર કોણ કહેવાય?

ઉત્તર ૩૫. જે વ્યકિત પાપથી બચાવે તે સાચો મિત્ર કહેવાય છે.

પ્રશ્ન ૩૬. મનુષ્યને માટે અલંકારરૂપ શું છે?

ઉત્તર ૩૬. શીલ - બ્રહ્મચર્ય - એ જ મનુષ્યને માટે સાચું આભૂષણ છે.

પ્રશ્ન ૩૭. વાણીની શોભા શી છે?

ઉત્તર ૩૭. સદા સર્વદા સત્ય વચન બોલવાં તે વાણીનું આભૂષણ છે.

किमनर्थफलं मानसमसङ्गतं का सुखावहा मैत्री ।
सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः सर्वथा त्यागः ।। १५ ।।

પ્રશ્ન ૩૮. અનર્થનું શું ફળ હોય છે?

ઉત્તર ૩૮. મનની અસંગતા હોવી તે.

પ્રશ્ન ૩૯. સુખદાયક વસ્તુ કઈ છે?

ઉત્તર ૩૯. સર્વ જીવો પ્રત્યે મૈત્રીભાવ રહે એ જ સુખદાયક છે.

પ્રશ્ન ૪૦. સમસ્ત વ્યસનો - પીડાઓનો નાશ કરવામાં ચતુર કોણ?

ઉત્તર ૪૦. સર્વ પરિગ્રહ આદિનો સર્વથા ત્યાગ કરનાર નિર્ગ્રંથને ચતુર કહે છે.

कोऽन्धो योऽकार्यरतः को बधिरो यः शृणोति न हितानि ।
को मूको यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति ।। १६ ।।

પ્રશ્ન ૪૧. અંધ કોણ છે?

ઉત્તર ૪૧. પરની નિંદા કરનાર અને નિંદ્ય કાર્ય કરવા જે તત્પર થાય તે અંધ છે.

પ્રશ્ન ૪૨. બહેરો કોણ છે?

ઉત્તર ૪૨. પોતાને હિતકારી વચનો જે સાંભળે નહિ તે જીવ બહેરો છે.

પ્રશ્ન ૪૩. મૂગો કોણ છે?

ઉત્તર ૪૩. અવસર પ્રાપ્ત થયે જે જીવ પ્રિય એવાં વચનો ઉચ્ચારી શકતો નથી તે જીવ મૂંગો છે.

किं मरणं मूर्खत्वं किं चानर्घ्यं यदवसरे दत्तम् ।
आमरणान्तिकं शल्यं प्रच्छन्नं यत्कृतमकार्यम् ।। १७ ।।

પ્રશ્ન ૪૪. મરણ શું છે?

ઉત્તર ૪૪. જે વ્યકિતમાં મૂર્ખતા ભરી પડી છે તેવા બુદ્ધિહીન જીવને મરણ જેવું દુ:ખ છે - તે મૃતકતુલ્ય છે.

પ્રશ્ન ૪૫. અમૂલ્ય વસ્તુ કઈ છે?

ઉત્તર ૪૫. યથાઅવસર આપેલું યોગ્ય દાન તે અમૂલ્ય વસ્તુ છે.

પ્રશ્ન ૪૬. મરણ પર્યંત શૂળની માફક હૃદયમાં ખટકે તેવી વસ્તુ શી છે?

ઉત્તર ૪૬. ગુપ્તપણે કરેલું કુકર્મ એ જ જીવને સદા ખટકયા કરે છે.

कुत्र विधेयो यत्नो विद्याभ्यासे सदौषधे दाने ।
अवधीरणा क्वकार्या खलपरयोषित्परधनेषु ।। १८ ।।

પ્રશ્ન ૪૭. કયા વિષયમાં ઉદ્યમ (પુરુષાર્થ) કરવો જોઈએ?

ઉત્તર ૪૭. વિદ્યાભ્યાસમાં અને શુદ્ધ - ઉત્તમ - ઔષધના દાનમાં જીવે ઉદ્યમ કરવો યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૪૮. નિંદા અર્થાત્ અવહેલના કોની કરવી?

ઉત્તર ૪૮. દુષ્ટ પુરુષ, પરસ્ત્રી અને પરધનના પરિચયની અવહેલના કરવી જોઈએ.

कार्हर्निशमनुचिन्त्या संसारासारता न च प्रमदा ।
का प्रेयसी विधेया करुणादाक्षिण्यमपि मैत्री ।।१९ ।।

પ્રશ્ન ૪૯. રાત્રિદિન ચિન્તન શાનું કરવું?

ઉત્તર ૪૯. સંસારની અસારતાનું સદા ચિન્તન કરવું. કોઈ સ્ત્રીના સ્વરૂપનું ચિંતન નહિ કરવું.

પ્રશ્ન ૫૦. પ્રિય કરવા યોગ્ય શું છે?

ઉત્તર ૫૦. મૈત્રી, કરુણા અને ચતુરાઈ પ્રિય કરવા યોગ્ય છે (સત્ત્વેષુ મૈત્રિભાવ રાખવો).

कण्ठगतैरप्यसुभिः कस्यात्मा नो समर्प्यते जातु ।
मूर्खस्य विषादस्य च गर्वस्य तथा कृतघ्नस्य ।। २० ।।

પ્રશ્ન ૫૧. કંઠે પ્રાણ હોય તેવી સ્થિતિમાં પણ પોતે શાને અધીન ન થવું?

ઉત્તર ૫૧. મૂર્ખને, અભિમાનીને, વિષાદયુકત હોય તેને તથા કૃતઘ્નીને કદી વશ ન થવું.

कः पूज्यः सद्वृतः कमधनमाचक्षते चलितवृत्तम् ।
केन जितं जगमेतत् सत्यतितिक्षावता पुंसा ।। २१ ।।

પ્રશ્ન પર. પૂજ્ય કોણ છે ?

ઉત્તર પર. સમ્યગ્ ચારિત્રવંત પુરુષ પૂજ્ય છે.

પ્રશ્ન પ૩. ધનરહિત કોણ કહેવાય ?

ઉત્તર પ૩. જે ચારિત્રની પ્રતિજ્ઞાથી ચલાયમાન થાય તે જીવ નિર્ધન કહેવાય છે.

પ્રશ્ન પ૪. આ જગતમાં વિજેતા કોણ કહેવાય ?

ઉત્તર પ૪. સત્યવચની અને શાન્ત ભાવવાળો પુરુષ જ આ સંસારમાંનો વિજેતા હોય છે.

कस्मै नमः सुरैरपि सुतरां क्रियते दया प्रधानाय ।
कस्मादुद्विजितव्यं संसारारण्यतः सुधिया ॥ २२ ॥

પ્રશ્ન પપ. દેવો પણ કોને નમે છે ?

ઉત્તર પપ. મુખ્યત્વે દયાધર્મનું પાલન કરવામાં જે જીવ શ્રેષ્ઠ છે તેને દેવો પણ નમે છે.

પ્રશ્ન પ૬. ભય શાનો રાખવો ?

ઉત્તર પ૬. સંસારરૂપી ભયંકર વનનો બુદ્ધિવાન પુરુષોએ ભય રાખવો યોગ્ય છે.

कस्य वशे प्राणिगणः सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य ।
क्व स्थातव्यं न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टलाभाय ॥ २३ ॥

પ્રશ્ન પ૭. જીવ માત્ર કોનાથી વશ થાય છે ?

ઉત્તર પ૭. જે સદા સત્ય અને પ્રિય વકતા છે અને વિનયવંત છે તેને સર્વ વશવર્તી રહે છે.

પ્રશ્ન પ૮. ક્યાં સ્થિત થવું યોગ્ય ?

ઉત્તર પ૮. દૃષ્ટ (જે પ્રત્યક્ષ ધનાદિ) અને અદૃષ્ટ (જે પરોક્ષ પુણ્યાદિ) તેની પ્રાપ્તિ માટે ન્યાયમાર્ગમાં સ્થિત થવું યોગ્ય છે.

विद्युद्विलसितचपलं किं दुर्जन संगतं युवतयश्च ।
कुलशीलनिष्प्रकम्पाः के कलिकालेऽपि सत्पुरुषः ।। २४ ।।

પ્રશ્ન ૫૯. વીજળીના ઝબકારા જેવું ક્ષણિક શું છે?

ઉત્તર ૫૯. સ્ત્રીઓના હાવભાવ - વિલાસ, અને દુર્જનોનો સંગ ક્ષણવર્તી હોય છે.

પ્રશ્ન ૬૦. આ કલિકાળમાં પણ કુલાચલ પર્વત જેવા અચળ કોણ છે?

ઉત્તર ૬૦. આ કાળે પણ સત્ પુરુષો (શ્રદ્ધા - આચરણમાં) અચળ છે.

किं शोच्यं कार्पण्यं सति विभवे किं प्रशस्यमौदार्यम् ।
तनुतरवित्तस्य तथा प्रभविष्णोर्यत्सहिष्णुत्वम् ।। २५ ।।

પ્રશ્ન ૬૧. આ સંસારમાં ખેદ કરવા યોગ્ય શું છે?

ઉત્તર ૬૧. કૃપણતા.

પ્રશ્ન ૬૨. પ્રાપ્ત વિભૂતિમાં પ્રશંસવા યોગ્ય શું છે?

ઉત્તર ૬૨. ઉદારતા.

પ્રશ્ન ૬૩. વળી નિર્ધનતામાં પણ પ્રશંસવા યોગ્ય શું છે?

ઉત્તર ૬૩. એ જ ઉદારતા.

પ્રશ્ન ૬૪. બળવાન પુરુષોનું વખાણવા યોગ્ય શું કાર્ય છે?

ઉત્તર ૬૪. તેઓની સહનશીલતા, અસહિષ્ણુતા, અથવા ક્ષમા પ્રશંસવા યોગ્ય છે.

चिंतामणिरिव दुर्लभमिह ननु कथयामि चतुर्भद्रम् ।
किं तद्वदन्ति भूयो विधूततमसो विशेषेण ।। २६ ।।

दानं प्रियवाक्सहितं ज्ञानमगर्वं क्षमान्वितं शौर्यम् ।
त्यागसहितं च वित्तं दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम् ।। २७ ।।

પ્રશ્ન ૬૫-૬૬. આ સંસારમાં ચિંતામણિ જેવું દુર્લભ શું છે?

ઉત્તર ૬૫. હું નિશ્ચયપૂર્વક કહું છું કે (નીચે નિર્દેશેલાં) ચાર ભદ્ર જ

અતિ અતિ દુર્લભ છે. જેનો અજ્ઞાનરૂપી અંધકાર નષ્ટ થયો છે એવા જ્ઞાની મહાત્મા એ ચાર ભદ્રોનું સ્વરૂપ વિશેષરૂપે કયા પ્રકારે કહે છે તેનો ઉત્તર :

ઉત્તર ૬૬. ભદ્ર એટલે કલ્યાણ તેમાં (૧) મૃદુ - મીઠાં - વચન સહિતનું દાન (૨) ગર્વરહિતજ્ઞાન (૩) ક્ષમાસહિત શૌર્ય અને (૪) દાન સાથેનું ધન એ ચાર કલ્યાણક અતિ દુર્લભ છે અર્થાત્ મીઠાં વચનો, જ્ઞાનનું અભિમાન ન હોય તે, તથા શૂરવીરતા ક્ષમાવંત હોય, અને ધનસંપદામાં દાન આપવાના ભાવ એ ચાર ભદ્રરૂપ કહ્યાં છે.

इति कण्ठगता विमला प्रश्नोत्तररत्नमालिका येषां ।
ते मुक्ताभरणा अपि विभान्ति विद्वत्समाजेषु ।। २८ ।।

ઉપસંહાર

જે પુરુષોના કંઠમાં આ નિર્મળ પ્રશ્નોત્તરરૂપી રત્નોની માળા રહેલી છે તેવા પુરુષ અન્ય કોઈ આભૂષણરહિત હોય તો પણ અને મોતીની માળા વગેરે આભૂષણ નહિ ધારવા છતાં પણ વિદ્વાનોની સભામાં અતિ શોભાને પાત્ર છે.

विवेकात्त्यक्तराज्येन राज्ञेयं रत्नमालिका ।
रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलंकृतिः ।।२९ ।।

વિવેકપૂર્વક જેણે રાજપાટ તજ્યાં છે એવા ભૂતપૂર્વ રાજા અમોઘવર્ષ મુનિએ સજ્જન પુરુષોને અને સાધુ પુરુષોને માટે આ ઉત્તમ આભૂષણ સમાન રત્નમાલા રચી છે.

श्रीमद्राजर्षिरमोघवर्षकृता प्रश्नोत्तररत्नमालिका समाप्ता ।

ઈતિ રાજર્ષિ અમોઘવર્ષકૃત પ્રશ્નોત્તરરત્નમાળા **સમાપ્ત**

ॐ

अपरा प्रश्नोत्तररत्नामालिका

અપરા પ્રશ્નોત્તર રત્નમાલિકા

आर्या

किमिहाराध्यं भगवन् रत्नत्रयतेजसा प्रतपमानम् ।
शुद्धं निजात्मतत्त्वं जिनरूपं सिद्धचक्रं च ॥ १ ॥

પ્રશ્ન ૧. હે ભગવંત, આ સંસારમાં આરાધવા યોગ્ય શું છે?

ઉત્તર ૧. રત્નત્રયના તેજથી પ્રકાશિત એવું પોતાનું શુદ્ધ આત્મતત્ત્વ, જિનેન્દ્ર - દેવનું યથાર્થ સ્વરૂપ અને સિદ્ધોનો સમૂહ તે આરાધન કરવા યોગ્ય છે.

को देवो निखिलज्ञो निर्दोषः किं श्रुतं तदुद्दिष्टम् ।
को गुरुरविषयवृत्तिर्निर्ग्रन्थः स्वस्वरूपस्थः ॥ २ ॥

પ્રશ્ન ૨. આ સંસારમાં દેવ કોણ છે?

ઉત્તર ૨. જે અઢાર દોષોરહિત, નિર્દોષ - નિર્મળ - સંપૂર્ણ પદાર્થ - તત્ત્વોના જ્ઞાતા જે સર્વજ્ઞ દેવ છે એ જ દેવ છે.

પ્રશ્ન ૩. શાસ્ત્રો કયાં છે?

ઉત્તર ૩. ઉપરોકત નિર્દોષ - સર્વજ્ઞ ભાષિત જે વચનો છે એ જ શાસ્ત્ર છે.

પ્રશ્ન ૪. આ સંસારમાં ગુરુ કોણ છે?

ઉત્તર ૪. જેની વિષયવાસનાઓમાં પ્રવૃત્તિ નથી અને જે પરિગ્રહરહિત નિર્ગ્રંથ ગુરુ છે, વળી જે સ્વ આત્મસ્વરૂપમાં સ્થિર થયા છે એ જ ગુરુ છે

किं दुर्लभं नृजन्म प्राप्येदं भवति किं च कर्तव्यम् ।
आत्महितमहितसंगत्यागो रागश्च गुरुवचने ।। ३ ।।

પ્રશ્ન ૫. આ સંસારમાં દુર્લભ શું છે?

ઉત્તર ૫. મનુષ્યજન્મ પ્રાપ્ત થવો દુર્લભ છે.

પ્રશ્ન ૬. મનુષ્યજન્મ પામીને જીવે શું કરવું જોઈએ?

ઉત્તર ૬. પોતાના આત્માનું હિત કરવું અને અહિતરૂપ જે પરિગ્રહ તેનો ત્યાગ કરવો તેમ જ સદ્ગુરુનાં વચનોમાં પરમ પ્રીતિ રુચિ કરવી જોઈએ - એ કર્તવ્ય છે.

का मुक्तिरखिलकर्मक्षतिरस्याः प्रापकश्च को मार्गः ।
दृष्टिज्ञनिर्वृत्तं कियत्सुखं तत्र चानन्तम् ।। ४ ।।

પ્રશ્ન ૭. મોક્ષ શું છે?

ઉત્તર ૭. સમસ્ત કર્મોનો નાશ થવો તે મોક્ષ છે.

પ્રશ્ન ૮. મોક્ષની પ્રાપ્તિનો માર્ગ કયો છે?

ઉત્તર ૮. સમ્યગ્ દર્શન, સમ્યક્ જ્ઞાન અને સમ્યક્ ચારિત્ર એ ત્રણની એકતા એ જ એક મોક્ષ માર્ગ છે.

પ્રશ્ન ૯. અને એ મોક્ષમાં સુખ કેટલું છે?

ઉત્તર ૯. મોક્ષનું સુખ અનાદિ અનંત એવું સુખ છે (સઆદિ અનંત અનંત સમાધિ રૂપ તે સુખ છે).

किं हिंसायाः मूलं कोपः कात्मान्यवञ्चिका माया ।
कोऽत्र गुरुष्वपि पूजातिक्रमहेतुः खलो मानः ।। ५ ।।

પ્રશ્ન ૧૦ હિંસાનું મૂળ શું છે?

ઉત્તર ૧૦. ક્રોધ એ જ હિંસાનું મૂળ છે.

પ્રશ્ન ૧૧. સ્વ અને પર ને છેતરનાર કોણ છે?

ઉત્તર ૧૧. માયા એટલે છળકપટ તે આત્મવંચના છે.

પ્રશ્ન ૧૨. ગુરુજનો પ્રત્યેનાં આદર - સન્માનને કોણ ઉલ્લંઘે છે?

ઉત્તર ૧૨. દુષ્ટ પ્રવૃત્તિનો કરનાર જીવ અહંકાર વડે એટલે મિથ્યાભિમાન વડે ગુરુજનોનો અનાદર કરનાર હોય છે.

किमनर्थस्य निदानं लोभः किं मण्डनं च शुचिशीलम् ।
को महिमा विद्वत्ता विवेकिता का व्रताचरणम् ।। ६ ।।

પ્રશ્ન ૧૩. અનર્થનું લક્ષણ શું છે ?

ઉત્તર ૧૩. લોભ - લાલચ છે તે સર્વ અનર્થનું મૂળ છે – લક્ષણ છે.

પ્રશ્ન ૧૪. મંડન એટલે શરીરના આભૂષણરૂપ કયું તત્ત્વ છે?

ઉત્તર ૧૪. પવિત્ર બ્રહ્મચર્ય છે તે (દેહનું અને આત્માનું) આભૂષણ છે.

પ્રશ્ન ૧૫. મહિમા શાનો છે?

ઉત્તર ૧૫. વિદ્યાનો - જ્ઞાનનો - મહિમા છે.

પ્રશ્ન ૧૬. વિવેક વિચાર શું છે ?

ઉત્તર ૧૬. લીધેલી પ્રતિજ્ઞા અને વ્રતોનું પાલન કરવું તે વિચારશીલતા છે.

मनसाऽपि किं न चिन्त्यं परदारा परधनं परापकृतिः ।
कीदृग्वचो न वाच्यं परुषं पीडाकरं कटुकम् ।। ७ ।।

પ્રશ્ન ૧૭. મનથી કદી પણ શાનું ચિન્ત્વન ન કરવું જોઈએ ?

ઉત્તર ૧૭. પરસ્ત્રીનું, પરધનનું અને પારકાએ કરેલા અપકારનું કદી પણ સ્મરણ ન કરવું.

પ્રશ્ન ૧૮. કેવાં વચન બોલવાં ન જોઈએ ?

ઉત્તર ૧૮. કઠોર, પીડાકારક અને કડવાં વચન બોલવાં ન જોઈએ. અર્થાત્ અપ્રિય એવું સત્ય પણ ન બોલવું.

किं हातव्यं सततं पैशून्यं व्यसनिता च मात्सर्यम् ।।
किमकरणीयं यत्परलोकविरुद्धं मनोऽनिष्टम् ।। ८ ।।

પ્રશ્ન ૧૯. સદા તજવા યોગ્ય શું છે?

ઉત્તર ૧૯. કોઈની ચાડીચુગલી કરવી, સાત વ્યસનો સેવવાં અને અન્યની

ઉન્નતિ સહન ન કરવી એવી પ્રકૃતિ તજવા યોગ્ય છે.

પ્રશ્ન ૨૦. ન કરવા યોગ્ય શું કાર્ય છે?

ઉત્તર ૨૦. જે પરલોકથી વિરુદ્ધ હોય અર્થાત્ મરણ પછી દુઃખ ઉત્પન્ન કરનાર હોય અને જે મનને અનિષ્ટ લાગે તેવું કાર્ય ન કરવું.

शम्पेव चञ्चला का सम्पत्सत्काव्यमिव किमनवद्यम् ।
जीवितमधर्मरहितं कलङ्कमुक्तं यशोयुक्तम् ॥ ९ ॥

પ્રશ્ન ૨૧. વીજળી જેવું ચંચળ શું છે?

ઉત્તર ૨૧. લક્ષ્મી અર્થાત્ ભૌતિક સંપદા સદા અસ્થિર છે.

પ્રશ્ન ૨૨. ઉત્તમ કાવ્ય જેવું પ્રશંસાયોગ્ય શું છે?

ઉત્તર ૨૨. એવું ઉત્તમ જીવન પ્રશંસનીય છે કે જે જીવન નિષ્પાપ છે, ને કલંકરહિત છે તેમ જ યશકીર્તિથી ભરપૂર છે તે જીવન પ્રશંસવા યોગ્ય છે.

किं दिनकृत्यं जिनपतिपूजासामायिकगुरुपास्तिः ।
त्रिविधशुचिपात्रदानं शास्त्राध्ययनं च सानन्दम् ॥ १० ॥

પ્રશ્ન ૨૩. પ્રતિદિન કરવા યોગ્ય કાર્ય શું છે છે?

ઉત્તર ૨૩. જિનેન્દ્ર દેવની પૂજા, સામાયિક, ગુરુની ઉપાસના તથા ત્રણ પ્રકારના સુપાત્રે દાન (પવિત્ર પાત્રોને દાન દેવું) અને પ્રસન્ન ચિત્તે શાસ્ત્ર સ્વાધ્યાય કરવા એ દરરોજનું કર્તવ્ય છે.

તેનો શ્લોક

देवपूजा गुरुपास्ति स्वाध्यायः संयमः तपः ।
दानं चेति गृहस्थाणां षट्कर्माणि दिने दिने ॥

૨ - ક (સ્વામિ સમન્તભદ્રદેવ)

इत्यपरा प्रश्नोत्तरभालिका समाप्ता ।

પ્રશ્નોત્તરનો સાર

(શ્રીમદ્ રાજચંદ્રે પોતાના સત્તરમા વર્ષ પૂર્વે પ્રશ્નોત્તરમાલિકા પર આધારિત આ સાર લખ્યો હતો.)

પ્રશ્નો	ઉત્તર
(૧) જગતમાં આદરવા યોગ્ય શું છે?	(૧) સદ્‌ગુરુનું વચન
(૨) શીઘ્ર કરવા યોગ્ય શું?	(૨) કર્મનો નિગ્રહ
(૩) મોક્ષતરુનું બીજ શું?	(૩) ક્રિયાસહિત સમ્યગ્જ્ઞાન
(૪) સદા ત્યાગવા યોગ્ય શું?	(૪) અકાર્ય કામ
(૫) સદા પવિત્ર કોણ?	(૫) જેનું અંતઃકરણ પાપરહિત હોય તે
(૬) સદા યૌવનવંત કોણ?	(૬) તૃષ્ણા (લોભદશા),
(૭) શૂરવીર કોણ?	(૭) જે સ્ત્રીના કટાક્ષથી વીંધાયો નહીં તે
(૮) મહત્તાનું મૂળ શું?	(૮) કોઈની પાસે પ્રાર્થના (યાચના) ન કરવી તે
(૯) સદા જાગૃત કોણ?	(૯) વિવેકી
(૧૦) આ જગતમાં નરક જેવું દુઃખ શું?	(૧૦) પરતંત્ર(પરવશ)રહેવું તે
(૧૧) અસ્થિર વસ્તુ શું?	(૧૧) યૌવન, લક્ષ્મી અને આયુષ્ય
(૧૨) આ જગતમાં અતિગહન શું?	(૧૨) સ્ત્રીચરિત્ર અને તેથી વધારે પુરુષચરિત્ર
(૧૩) ચંદ્રમાનાં કિરણો સમાન શ્વેત-કીર્તિને ધારણ કરનાર કોણ?	(૧૩) સુમતિ અને સજ્જન
(૧૪) જેને ચોર પણ લઈ જઈ શકે નહીં તેવો ખજાનો શું?	(૧૪) વિદ્યા, સત્ય અને શિયળવ્રત.
(૧૫) જીવનું સદા અનર્થ કરનાર કોણ?	(૧૫) આર્ત અને રૌદ્રધ્યાન
(૧૬) અંધ કોણ?	(૧૬) કામી અને રાગી
(૧૭) બહેરો કોણ?	(૧૭) જે હિતકારી વચનને સાંભળે નહિ તે
(૧૮) મૂગો કોણ?	(૧૮) જે અવસર આવ્યે પ્રિય વચન ન બોલી શકે તે.
(૧૯) શલ્યની પેઠે સદા દુઃખ દેનાર શું?	(૧૯) છાનું કરેલું કર્મ
(૨૦) અવિશ્વાસ કરવા યોગ્ય કોણ?	(૨૦) યુવતી અને અસજ્જન.
(૨૧) સદા ધ્યાનમાં રાખવા યોગ્ય શું?	(૨૧) સંસારની અસારતા
(૨૨) સદા પૂજનીય કોણ?	(૨૨) વિતરાગદેવ, સુસાધુ અને સુધર્મ.

સ્ટેટ્સ પીપલ પ્રેસ, કોટ, મુંબઇ ૪૦૦૦૦૧

प्रस्तुत संस्करण एवं सन्दर्भ

- कहते हैं समय के पंख होते हैं, पाँव नहीं। हम कितना ही तेज चलें समय आगे निकल जाता है। समय के कंधे से कंधा मिला कर चलना भी सभी चाहते हैं पर क्या सभी ऐसा कर पाते हैं ? नहीं। लेकिन एक बात निश्चित हैं समय से बहुत पिछड़े हुए लोगों की अपेक्षा, ऐसे कर्मठजन अधिक स्मरणीय होते हैं जो समय के निकट तक पहुँच जाते हैं।
- हमारे पिताश्री पूज्य कुन्दनलाल जी ऐसे ही एक कर्मठ तपस्वी थे। काल से हमारी दूरी जितनी अधिक है, उनकी उतनी ही कम थी। घटनाओं और परिस्थितियों के जंगल से मुक्त होकर प्रशस्त पथ पर निकल पाना, उनके लिये बहुत कठिन नहीं होता था।
- धर्म की विधाओं को उन्होंने जिया था। एक आस्था थी कि वे निरंतर ही नियम और योगपूर्वक जैन पुस्तकों के प्रकाशन प्रसारण में तन-मन-धन से जुटे रहें। यह उनकी बौद्धिकता ही थी कि पाँचों प्रमुख जैन स्तोत्र उल्लेखनीय रूप से प्रकाशित, वितरित, लोकप्रिय एवं समादृत हो सके।
- भगवान महावीर के 2500 वें निर्वाण महोत्सव के अवसर पर रार्जषि अमोघ वर्ष कृत प्रश्नोत्तर रत्नमालिका की पांडुलिपि को जिसे उन्होंने गुर्जर अनुवाद तथा हिन्दी पद्यानुवाद कर तैयार रखा था आज हम सुधी पाठकों तक पहुँचा पा रहे हैं। यह कार्य उनके दिवंगत होने के लगभग 10 वर्ष बाद संभव हो पाया है हमें प्रसन्नता एवं संतोष है कि उनके बालक प्रथम बार किंचित कुछ कर सके।
- प्रस्तुत रत्नमालिका का गुजराती अनुवाद कर आ० श्री प्राणलाल भाई देसाई तथा प्राचीन भाषानुवाद का संशोधन कर आदरणीया बहिन सौ० सुप्रभा सिंघई ने इसकी उपादेयता और अधिक बढ़ा दी है। हम कृतज्ञ हैं।
- गुजराती अनुवाद के संशोधन एवं शुद्ध मुद्रण में गुजराती के मूर्धन्य लेखक आ० श्री मधुकर रांदेरिया का सहयोग चिरस्मरणीय रहेगा।
- दिव्ययात्री बहुत दूर चला गया है पर उसके अमिट प्रकाश चिह्न हमारे साथ हैं और रहेंगे। ईश्वर हमें यह गुरुभार ढोने की शक्ति, क्षमता और सुविधा प्रदान करेगा—पूर्ण विश्वास है।

महावीर जयन्ती
1976

वीरेन्द्रकुमार जैन
देवेन्द्रकुमार जैन

जैन स्तोत्र संग्रह अर्थात् पंचस्तोत्र—संग्रह

जैन-साहित्यका स्तोत्र-साहित्य विशाल है। इसमें सुप्रसिद्ध पंचस्तोत्र तो बड़े ही सुन्दर भाव-भक्तिरसपूर्ण और दैवी-चमत्कारयुक्त हैं। अभी तक ये स्तोत्र आधुनिक पद्धतिसे सुसम्पादित होके नहीं छपे थे। इनके साथ संस्कृतटीका है, नूतन और पुरातन पद्यानुवादोंसे विभूषित हैं। इन पाँचों का सम्पादन और टीका साहित्याचार्य पं० डॉ० पन्नालालजी जैन शास्त्री ने की है। श्लोकोंके भावोंको विस्तारसे, स्पष्टतासे और बहुत सरल भाषा में समझाया है। पहली ही बार सुन्दरता और शुद्धतापूर्वक छपे हैं। छपाई बहुत सुन्दर है, कागज अच्छा है। मूल्य भी कम है।

1. **भक्तामरस्तोत्र अर्थात् आदिनाथस्तोत्र**—श्रीमानतुंगाचार्यकृत मूलश्लोक, श्रीचन्द्रकीर्तिकृत संस्कृतटीका, कविराज पं० गिरधर शर्माजीकृत हिन्दी-पद्यानुवाद। भाषाटीका। मू० 1.50 पैसा

2. **कल्याणमन्दिरस्तोत्र अर्थात् पार्श्वनाथस्तोत्र**—श्री कुमुदचन्द्र अपरनाम तार्किकशिरोमणि सिद्धसेनदिवाकरकृत मूलश्लोक, चन्द्रकीर्तिकृत संस्कृतटीका, स्वर्गीय कविवर बनारसीदासजीकृत पुरातन पद्यानुवाद, राजकवि गिरिधरजी शर्माकृत नूतन हिन्दी पद्यानुवाद। भाषाटीका सहित है। मू० 1.25 पैसा

3. **विषापहारस्तोत्र**—महाकवि धनंजयकृत, मूलश्लोक, श्रीचन्द्र-
कीर्तिकृत संस्कृतटीका, स्व० **स्तोत्र अर्थात् आदिनाथस्तोत्र—** पद्यानुवाद,
भाषाटीका सहित है। कीर्तिकृत संस्कृतटीका, कविराज पं० ि 25 पै०

4. **एकीभावस्तोत्र**— भाषाटीका। कविव
भूधरदासकृत पुरातन पद्यानु**मन्दिरस्तोत्र अर्थात् पार्श्वनाथस्तोत्र** पद्या-
नुवाद। भाषाटीका सहित। शरोमणि सिद्धसेनदिवाकरकृत मूलश्लो 00 पै०

5. **जिनचर्विंशतिका** य कविवर बनारसीदासजीकृत पुरातन क, पं०
प्रवर आशाधरजीकृत संस्कृतटं र्मकृत नूतन हिन्दी पद्यानुवाद। भा पुरातन
पद्यानुवाद, धन्यकुमारजी सुधेशकृ टीका सहित
है। मू० 1.50 पै०

सूचना—पाँचों स्तोत्र एक सुन्दर मजबूत जिल्द में भी उपलब्ध हैं। मू० 6.50 पै०

प्रश्नोत्तर रत्नमालिका—राजर्षि अमोघवर्ष कृत मूल श्लोक, पं० जिनवरदास जी कृत भाषानुवाद, पं० गुणभद्रकृत हिन्दी अनुवाद तथा श्री प्राणलाल भाई कृत गुजराती अनुवाद सहित। मू० 1.50 पै०

वीरेन्द्रकुमार देवेन्द्रकुमार जैन

138 सी० श्रीसन्मतिकुटीर, बावड़ी चाल, चन्दवाड़ी, बम्बई 400040